दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7 | 3 यूपी के इन सीटों को माना जाता है भगवा गढ़ | 5 अवैध संबंध, लालच और हत्या: भाभी ने प्रेमी के साथ मिलकर देवर को मार डाला, 78 दिन तक सोशल मीडिया पर जिन्दा रखा | 8 मैक्सवेल के नाम हुआ शर्मनाक रिकार्ड

UPHIN51019 | वर्ष: 01, अंक: 44 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 27 मई, 2024

वोटिंग का नया रिकार्ड बनाने को तैयार गोरखपुर

संवाददाता, गोरखपुर। अंतिम चरण में मतदान को लेकर जिला निर्वाचन कार्यालय की ओर से तैयारी की जा रही है। भीषण गर्मी के बावजूद जिले में मतदान का नया रिकार्ड बनाने की तैयारी है। अबतक सर्वाधिक मतदान 1967 के चुनाव में हुआ था। उस समय गोरखपुर के लोगों ने 61.28 प्रतिशत वोटिंग कर प्रथम श्रेणी में स्वयं को उत्तीर्ण किया था।

2019 के लोकसभा चुनाव में भी पूरा जोर लगाया गया था लेकिन 59.59 प्रतिशत ही मतदान हो सका। अब तक के इतिहास में यह दूसरा सर्वाधिक मतदान है। दो प्रतिशत मतदान बढ़ाकर नया रिकार्ड बनाया जा सकता है इसलिए चुनाव से जुड़े अधिकारी काफी उत्साहित हैं। गोरखपुर में मतदाता सूची के पुनरीक्षण के बाद लगभग एक लाख मतदाता बढ़े हैं। ये ऐसे मतदाता हैं, जिनसे बीएलओ ने संपर्क किया था। इनका वोट पड़ने की पूरी संभावना है। हर बार की तरह इस बार भी बड़े पैमाने पर मतदाता जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। विभिन्न माध्यमों से लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सुरक्षा में लगे पुलिस कर्मियों को भी इस बात की हिदायत दी जा रही है कि किसी मतदाता को अनावश्यक रूप से परेशान न किया जाए। मतदान केंद्रों पर दिव्यांग एवं बुजुर्ग मतदाताओं की सुविधा के लिए रैंप, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था होगी। नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से भी मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक किया जा रहा है।

गोरखपुर में मतदाता सूची के पुनरीक्षण के बाद लगभग एक लाख मतदाता बढ़े हैं। ये ऐसे मतदाता हैं जिनसे बीएलओ ने संपर्क किया था। इनका वोट पड़ने की पूरी संभावना है। हर बार की तरह इस बार भी बड़े पैमाने पर मतदाता जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। विभिन्न माध्यमों से लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

यूपी में गर्मी का कहर

चिलचिलाती धूप और गर्मी से फिलहाल अभी राहत मिलने के आसार नजर नहीं

- 72 घंटे में तीन डिग्री और बढ़ सकता है पारा
- अगले पांच दिनों तक हीट वेव का रेड अलर्ट
- स्वास्थ्य विभाग आपातकालीन स्थिति के लिए तैयार
- अस्पतालों में बेड रिजर्व किए गए

सबसे अधिक गर्म शहर झांसी रहा

उत्तर प्रदेश में मौसम ने एक बार फिर करवट बदली है। बीते कई दिनों से तापमान में कमी देखी जा रही थी लेकिन अब फिर से तापमान ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। आने वाले चार–पांच दिनों में तापमान 45 पार जा सकता है। आइए जानते हैं कि आज गुरुवार को यूपी का मौसम कैसा रहेगा।

यूपी में मौसम का मिजाज बदल गया है। प्रदेश के कई जिलों में भयंकर गर्मी पड़ने के आसार हैं। लोगों को दिन में गर्मी ने बेचैन किया तो वही रात में भी राहत नहीं मिली। पूर्वी उत्तर प्रदेश में 30 से 40 किलोमीटर की गति से हवाएं चल सकती हैं। सूरज आगामी दिनों में तेवर तो दिखाएगा ही लू भी बेहाल करेगी।

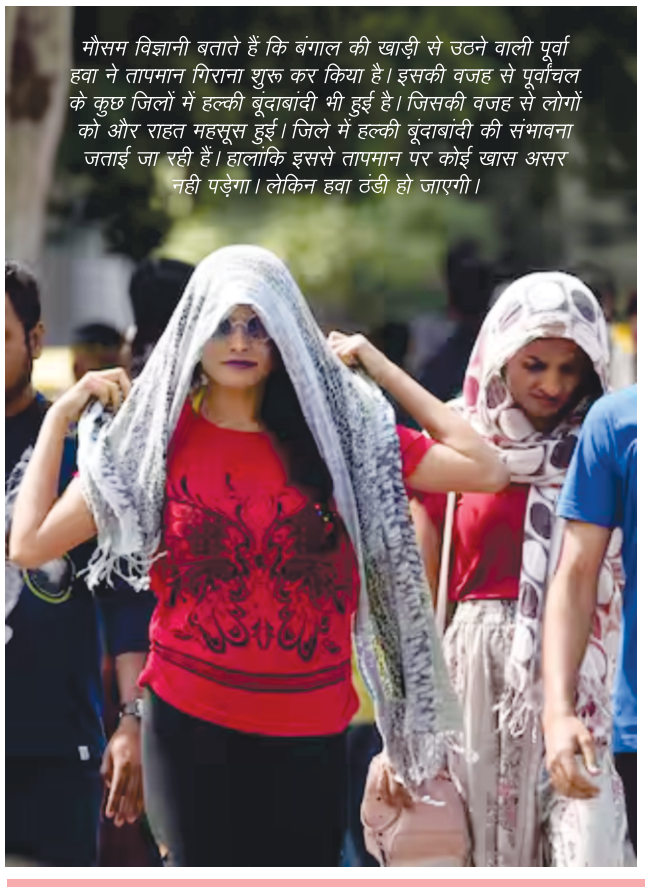

मौसम विज्ञानी बताते हैं कि बंगाल की खाड़ी से उठने वाली पूर्वा हवा ने तापमान गिराना शुरू कर किया है। इसकी वजह से पूर्वांचल के कुछ जिलों में हल्की बूंदाबांदी भी हुई है। जिसकी वजह से लोगों को और राहत महसूस हुई। जिले में हल्की बूंदाबांदी की संभावना जताई जा रही हैं। हालांकि इससे तापमान पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। लेकिन हवा ठंडी हो जाएगी।

चिलचिलाती धूप और गर्मी से फिलहाल अभी राहत मिलने के आसार नजर नहीं आ रहे। बुधवार को झांसी में सर्वाधिक 45 डिग्री तो वहीं ओरई में 44.6 डिग्री और बुलंदशहर में 42 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आज और कल हीट वेव चलने की चेतावनी जारी की है।

अगले दो दिनों तक प्रदेश के पश्चिमी इलाकों में दिन में लू चलने के आसार हैं, वहीं रात में भी उष्ण रात्रि की चेतावनी जारी की गई है। हालांकि पूर्वी उत्तर प्रदेश में फिलहाल शुक्रवार तक तापमान के स्थिर रहने का पूर्वानुमान है। वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कूमार सिंह के अनुसार अगले दो दिनों तक पूर्वी यूपी के ज्यादातर जिलों में मौसम शुष्क रहेगा और तापमान में कोई विशेष परिवर्तन देखने को नहीं मिलेगा।

हालांकि उन्होंने बताया कि प्रदेश के उत्तरी तराई इलाकों जैसे महराजगंज, सिद्धार्थ नगर, कुशीनगर, बहराइच आदि में 30 से 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार के साथ हवा चलने व गरज चमक के साथ हल्की बारिश के आसार हैं।

पारे में खास बदलाव नहीं, पर हवा दे रही राहत

राजधानी में दिन के तापमान में विशेष बदलाव नहीं है, पर पुरवा हवा राहत का अहसास करा रही है। मौसम विभाग के मुताबिक दो दिन तक अभी ऐसा ही मौसम रहने के आसार हैं। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक, फिलहाल बारिश के आसार नहीं हैं। इससे गर्मी से खास राहत नहीं मिलेगी, लेकिन अगले दो दिनों तक अधिकतम तापमान में बढ़ोतरी के संकेत भी नहीं हैं। शहर में बुधवार को लोग दिन में धूप और गर्मी से बेहाल रहे। अधिकतम तापमान 39.3 डिग्री और न्यूनतम पारा 29.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मंगलवार को रात का तापमान 27.1 डिग्री था, जबकि दिन का पारा 39 डिग्री सेल्सियस था।

सम्पादकीय

नरेन्द्र मोदी की अमर चित्रकथा

एक न्यूज चैनल की एंकर को दिए तथाकथित एक्सक्लूसिव साक्षात्कार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ही बारे में एक बड़ा खुलासा किया

नेहरू–गांधी पर अनगिनत किताबें लिखी गई हैं, कई शोध पत्र तैयार हुए हैं, जिसमें उनके पारिवारिक जीवन, बचपन, शिक्षा, राजनैतिक–सामाजिक जीवन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान, अलग–अलग राजनेताओं के साथ उनके रिश्ते, उनके आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक मुद्दों पर विचार, वैश्विक राजनीति पर उनका दृष्टिकोण इन तमाम पहलुओं पर चर्चा की गई है, लेकिन सभी में तथ्य एक जैसे ही हैं।

एक न्यूज चैनल की एंकर को दिए तथाकथित एक्सक्लूसिव साक्षात्कार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने ही बारे में एक बड़ा खुलासा किया। उन्होंने कहा कि उन्हें लगता है कि वे बॉयलॉजिकल यानी जैविक तरीके से इस दुनिया में नहीं आए हैं, उनमें परमात्मा का अंश है। श्री मोदी ने ये सीधे–सीधे नहीं कहा कि वे दैवीय अवतार हैं, लेकिन उनकी बातों से यही समझा जाना चाहिए। नरेन्द्र मोदी के बचपन के कई किस्से अमर चित्रकथा की तरह दस सालों में प्रचारित–प्रसारित किए जा चुके हैं। उनकी मां के घर–घर जाकर बर्तन मांजने से लेकर, खुद नरेन्द्र मोदी के वडनगर स्टेशन में चाय बेचने, मगरमच्छ के बच्चे को घर में उठाकर ले आने, हिमालय की गोद में तपस्या करने, फकीर बनकर रहने जैसी अनगिनत कहानियां देश सुन चुका है। नरेन्द्र मोदी भिक्षाटन करके जीवनयापन भी करते थे, इसी दौरान उनकी विदेश यात्राओं की तस्वीरें भी हैं और फिर वे बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में भी हिस्सा लेते हैं। वे संघ के कार्यालयों में दरी बिछाने, झाड़ू लगाने जैसे काम करते हैं, फिर ये भी बताते हैं कि उन्होंने ई मेल का इस्तेमाल कब से करना शुरु कर दिया, उनके पास डिजीटल कैमरा किस जमाने में था। अमेरिका का एक किस्सा नरेन्द्र मोदी ने बताया कि उनके पास एक डिजीटल डायरी हुआ करती थी, और अमेरिका की एक गैजेट वाली दुकान में उन्होंने उसका एकदम नया संस्करण दिखाने कहा तो उस दुकानदार का जवाब था कि उसने खुद ऐसी डायरी पहली बार देखी है। यानी जो डिवाइस अमेरिका की दुकानों में नहीं थी, वो भारत में फकीरों का जीवन जीने वाले मोदीजी के पास थी। संन्यास, फकीरी, तपस्या के साथ डिजीटल उपकरण भी नरेन्द्र मोदी के पास थे और इन सबके बीच उन्होंने एंटायर पॉलिटिकल साइंस यानी समग्र राजनीति विज्ञान में एम ए की डिग्री भी हासिल कर ली। अगले बरस श्री मोदी के जैविक तौर पर 75 बरस पूरे होने वाले हैं। अवतारों की आयु की गणना किस हिसाब से की जाती है, यह हमें नहीं मालूम।

इस बारे में नरेन्द्र मोदी ही बता सकते हैं कि उनकी अवतारी आयु कितनी है। वैसे साधारण इंसानों के लिए नरेन्द्र मोदी के 75 बरसों की कहानियों को ही सिलसिलेवार तरीके से लगाना कठिन है। अगर कोई शोधार्थी नरेन्द्र मोदी के जीवन पर शोध करे, तो उसके लिए बड़ी समस्या रहेगी कि वह कब और कहां से इसकी शुरुआत करे। नेहरू–गांधी पर अनगिनत किताबें लिखी गई हैं, कई शोध पत्र तैयार हुए हैं, जिसमें उनके पारिवारिक जीवन, बचपन, शिक्षा, राजनैतिक–सामाजिक जीवन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान, अलग–अलग राजनेताओं के साथ उनके रिश्ते, उनके आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक मुद्दों पर विचार, वैश्विक राजनीति पर उनका दृष्टिकोण इन तमाम पहलुओं पर चर्चा की गई है, लेकिन सभी में तथ्य एक जैसे ही हैं। उनमें कोई झोल, कोई बदलाव नहीं है कि एक किताब में गांधीजी को इंग्लैंड से पढ़ा हुआ बताया गया है, और दूसरी किताब में दावा है कि उन्होंने तो पहले ही अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार कर दिया था। हर किताब, हर लेख में तारीखों और तथ्यों में कोई बदलाव नहीं है।

क्योंकि गांधी–नेहरू का जीवन जैसा था, सबके सामने था। उनके विचारों में भी अगर कोई बदलाव आया तो उसका भी तर्क सहित कारण मौजूद है कि किस घटना के बाद किसी मुद्दे पर उनके विचार बदले या उनका निर्णय बदला। क्योंकि गांधी–नेहरू भी अपने कार्यों और विचारों से महान होने के बावजूद थे तो इंसान ही। उनका भी जैविक तौर पर ही जन्म हुआ था। अलबर्ट आइंस्टाइन ने भले ही गांधीजी के लिए कहा था कि आज से पांच सौ साल बाद की पीढ़ियां यह नहीं मानेंगी कि हाड़–मांस का कोई ऐसा इंसान भी था। लेकिन श्री मोदी अपने लिए पांच सौ साल बाद के हालात का इंतजार नहीं करना चाहते। आने वाली पीढ़ियां उनके बारे में क्या कहें और क्या न कहें, इससे बेहतर है कि खुद ही अपने लिए किस्से गढ़ लें।

नरेन्द्र मोदी ने जब खुद में दैवीय अंश होने का ऐलान कर दिया है तो फिर नेहरू–गांधी से उनका मुकाबला अपने आप खारिज हो जाता है। एक अन्य साक्षात्कार में श्री मोदी ने यह दावा भी किया था कि राहुल गांधी उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री इसलिए नहीं बनते देखना चाहते, क्योंकि उन्हें डर है कि फिर वे उनकी दादी और परनाना से आगे निकल जाएंगे। यानी श्री मोदी ने स्वयं को पहले ही इंदिरा गांधी और प.नेहरू से उच्च स्थान दे दिया था। साधारण इंसान के लिए यह बड़ी उपलब्धि होती कि देश के दो पूर्व प्रधानमंत्रियों से आगे वे निकल रहे हैं। लेकिन नरेन्द्र मोदी चूंकि अवतारी हैं, इसलिए उन्हें इतने में संतुष्टि नहीं हुई और अब वे प्रधानमंत्रियों से आगे परम पद अपने लिए बनाना चाहते हैं। देश के कई पूर्व प्रधानमंत्रियों को भारत रत्न दिया गया है, जो देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। लेकिन श्री मोदी के लिए भाजपा को पहले ही कोई अन्य सम्मान गढ़ लेना चाहिए था, जो केवल उन्हें हासिल हो, क्योंकि भारत रत्न श्री मोदी के लिए संभवतः पर्याप्त नहीं है। ऐसा लगता है कि श्री मोदी का मुकाबला अब देश के पूर्व प्रधानमंत्रियों से नहीं, सीधे विष्णु के राम और कृष्ण जैसे अवतारों से हैं। राम और कृष्ण की कहानियां देश भर में प्रचलित हैं। उनके अलग–अलग नाम और रूपों से अलग–अलग मंदिर बने हुए हैं।

लेकिन इन अवतारों ने भी जीवन तो आम इंसानों की तरह ही जिया और जब भी सत्ता का सवाल आया तो सत्ता की जगह पीड़ित प्रजा के साथ खड़ा होना स्वीकार किया। धार्मिक ग्रंथों में भारत का संविधान नहीं है, जो प्रजा को नागरिक होने की शक्ति से संपन्न करता है। उसे अधिकार देता है कि वह अपने शासक से आंख में आंख डालकर सवाल कर सके कि उसके साथ अन्याय क्यों हुआ, उसके हक क्यों मारे गए। इसलिए जब तक किसी धार्मिक ग्रंथ में नरेन्द्र मोदी को अवतारी घोषित नहीं किया जाता, तब तक उन्हें भी संविधान की दी गई शक्ति के आधार पर जनता के प्रति जवाबदेह तो माना ही जाएगा।

इस जिम्मेदारी से वे खुद को दैवीय शक्ति का अंश बताकर बरी नहीं हो सकते। धार्मिक ग्रंथों में अवतारी पुरुषों को पीड़ितों के पक्ष में, न्याय के साथ खड़ा हुआ इसलिए दिखाया गया है ताकि इंसान सबक ले सकें कि ब्रह्मांड, ईश्वर, दैवीय शक्ति, हर किसी के आगे जब भी सच और झूठ, गलत और सही में से किसी एक का पक्ष लेने की बात आएगी तो वो सच और सही का ही साथ देंगे। इसलिए दुर्योधन को कृष्ण अपनी सारी सेना देते हैं, लेकिन खुद अर्जुन के रथ के सारथी बनते हैं। इसी तरह राम बाली का साथ न देकर अन्याय का शिकार बने सुग्रीव का साथ देते हैं।

अब सवाल यह है कि नरेन्द्र मोदी ने अब तक किसका साथ दिया या आगे किसका साथ देंगे। एक तरफ सत्ता और धन की शक्ति से संपन्न लोग हैं, जिनके पास देश की संपत्ति का बड़ा हिस्सा है और दूसरी तरफ वो करोड़ों लोग हैं, जिनके लिए 20–30 रूपए रोजाना के खर्चे के आधार पर तय किया जाता है कि वे गरीबी रेखा से ऊपर हैं या नीचे हैं। जिन्हें पांच किलो अनाज के लिए अपने आत्मसम्मान को किनारे रखकर कतार में खड़ा होने की मजबूरी है। आश्चर्य की बात है कि दस सालों में अपनी अवतारी शक्ति से श्री मोदी ने गरीबों की मजबूरी और पीड़ा को दूर करने का चमत्कार करके क्यों नहीं दिखाया।

क्योंकि राम और कृष्ण की कहानियों में तो ऐसे चमत्कार भरे पड़े हैं। नेहरू–गांधी, मौलाना आजाद, सरदार पटेल, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद की कहानियों में चमत्कार नहीं है, लेकिन अन्याय के खिलाफ हिम्मत से लड़ने और सच की लड़ाई में त्याग करने की बहादुरी अवश्य है। देश अब तक इस हिम्मत और त्याग से प्रेरणा लेता आया है। नरेन्द्र मोदी देश को कौन सी प्रेरणा देने वाले हैं, यह जानना दिलचस्प होगा।

मोदी खेमे और संघ के बीच दरार

आरएसएस नेताओं ने कर्नाटक के नंदिनी मिल्क कोअश्वपरेटिव को बंद करने और संचालन को गुजरात स्थित अमूल को सौंपने के उनके प्रयास की ओर भी इशारा किया

आरएसएस नेताओं ने कर्नाटक के नंदिनी मिल्क कोऑपरेटिव को बंद करने और संचालन को गुजरात स्थित अमूल को सौंपने के उनके प्रयास की ओर भी इशारा किया। यह भी बताया गया कि कैसे दो गुजराती नेता अपने पद और कार्यालय का उपयोग करके राज्यों पर अपना आदेश थोप रहे थे और महाराष्ट्र सरकार को गुजराती व्यापारियों और व्यापारियों की देखभाल करने के लिए मजबूर कर रहे थे। यह अपरिहार्य था। अपने अस्तित्व के सौ वर्षों में इससे पहले कभी भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), जो दक्षिणपंथी राजनीतिक संगठन भाजपा का मूल संगठन है, के किसी भी सरसंघचालक को इस तरह के अपमान का सामना नहीं करना पड़ा था, जैसा कि वर्तमान सरसंघचालक मोहन भागवत को झेलना पड़ा है। उनका अपमान किसी और ने नहीं बल्कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा ने किया है। यह समझ से परे है कि नड्डा संघ परिवार के सभी समूहों के प्रमुख का अपमान कैसे कर सकते हैं!

लेकिन ऐसा हुआ। केवल चंद दिन पहले, उन्होंने एक सार्वजनिक बयान दिया थाः 'हम (भाजपा) बड़े हो गये हैं, हम अब और अधिक सक्षम हैं' भाजपा खुद चलती है। मथुरा और काशी में विवादित स्थलों पर मंदिर को लेकर पार्टी की कोई योजना नहीं है। यह उस समय से विकसित हुआ है जब इसे आरएसएस की जरूरत थी और अब यह 'सक्षम' है और अपना काम खुद चलाता है। आरएसएस एक 'वैचारिक मोर्चा' है और अपना काम खुद करता है।'

नड्डा के इस दुस्साहस से पूरा आरएसएस नेतृत्व स्तब्ध है। ऐसा नहीं है कि वे उस व्यक्ति से अनभिज्ञ हैं, जिसने नड्डा को इस तरह का अभद्र और घटिया बयान देने के लिए उकसाया था। लेकिन इसके लिए वे फिर भागवत को दोषी मानते हैं। लगभग सभी वरिष्ठ नेता यह महसूस करते हैं कि भागवत ने एक फ्रेंकेंस्टीन बनाया है। ये नेता लगातार नरेंद्र मोदी की शासन शैली और कार्यप्रणाली को उनके ध्यान में लाते रहे हैं, लेकिन उन्होंने इन्हें गंभीरता से लेने से इनकार कर दिया।

दो साल पहले, आरएसएस के दूसरे नंबर के महासचिव, दत्तात्रेय होसबले ने भाजपा सरकार की एक बहुत ही जर्जर छवि पेश की थी, जिसमें कहा गया था कि मोदी सरकार चलाने के प्रति गंभीर नहीं हैं। आरएसएस नेताओं का कहना है कि यदि भागवत ने कुछ कार्रवाई की होती तो स्थिति इतनी खराब नहीं होती, जहां आरएसएस के अस्तित्व और कद को एक ऐसे व्यक्तिके माध्यम से चुनौती दी जा रही है, जिसके साथ मोदी और अमित शाह एक आश्रित से अधिक व्यवहार नहीं करते हैं।

आरएसएस आकाओं को अपनी मिसाइल भेजने के लिए नड्डा ने एक ऐसा समय चुना जो सीधे तौर पर संकेत देता है कि सबसे बुरा समय अभी आना बाकी है। किसी भी चतुर राजनेता ने कभी भी अपने राजनीतिक और वैचारिक गुरु के अधिकार को अपमानित करने की हिम्मत नहीं की होगी, वह भी महत्वपूर्ण लोकसभा चुनाव से समाप्त होने के ठीक पहले क्योंकि इससे पूरे देश में, खासकर कार्यकर्ताओं के बीच एक गलत संदेश जायेगा। लेकिन उन्होंने परिणामों की परवाह किये बिना ऐसा किया। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके राजनीतिक आका भाजपा को संघ के प्रभुत्व से मुक्त कराने और उसे दक्षिणपंथी विचारों और हिंदुत्व की राजनीति के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में पेश करने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

भयावह परिणामों से बेपरवाह, नड्डा ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा कुछ मिथकों को तोड़ देगी जो सभी को आश्चर्यचकित कर देगी। हालांकि उन्होंने कहा कि मोदी को पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक लोगों का अपार आशीर्वाद प्राप्त है, लेकिन उन्होंने 'मिथको' की वास्तविक प्रकृति का खुलासा नहीं किया। उन्होंने फिर भी यह संकेत दिया कि आरएसएस भाजपा का वैचारिक गुरु नहीं रहेगा। उनका बयान काफी भरा–पूरा है, लेकिन इससे मोदी के इरादे नहीं छुपते कि वह अपनी सत्ता और व्यक्तित्व पर किसी भी तरह का क्षरण नहीं आने देंगे। वह चुपचाप आरएसएस के आदेश को स्वीकार नहीं करने वाले हैं। तथ्य यह है कि उन्होंने कभी भी आरएसएस की बात नहीं मानी और यहां तक कि कई मौकों पर उन्होंने उन्हें कूड़ेदान में फेंकने का साहस भी किया।

2019 में दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद मोदी ने अपने जौहर दिखाना शुरू कर दिया। लेकिन आरएसएस नेतृत्व ने उनकी जांच नहीं की। अजीब बात है कि भागवत मोदी के माध्यम से भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के अपने मिशन की सफलता से इतने खुश थे कि उन्होंने उनके गलत कामों को नजरअंदाज करना पसंद किया। मोदी के प्रति उनका दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि भागवत को मिशन हासिल करने के लिए अपनाये गये तंत्र की तुलना में अंतिम लाभ की अधिक चिंता थी। उनके लिए शुद्धता, शुचिता और पारदर्शिता महत्वपूर्ण नहीं थी।

भागवत के लिए चौंकाने वाली बात यह है कि मोदी की कार्यशैली ज्यादा मायने नहीं रखती, जबकि इससे आरएसएस नेतृत्व में गहरी नाराजगी है। आरएसएस नेतृत्व की मुख्य बेचैनी मोदी की शासन शैली और उनका व्यक्ति–केंद्रित संचालन था। यहां तक कि उन्होंने भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं को भी बौना बना दिया। आरएसएस के आदेशों को न मानने या उसके निर्देशों की घोर अवहेलना ने उन्हें उनके प्रति शत्रुतापूर्ण बना दिया है। लेकिन वे असहाय महसूस कर रहे थे क्योंकि उनका मुखिया उन्हें बंधन में बांधने को तैयार नहीं था। फिर भी संघ के सूत्रों का कहना है कि आरएसएस के कुछ वरिष्ठ नेताओं द्वारा मोदी के खिलाफ भागवत से की गई शिकायत ने संकट को बढ़ा दिया है। इन नेताओं ने, जिनमें अधिकतर महाराष्ट्र के थे, भागवत के सामने विरोध जताया था कि मोदी महाराष्ट्र को गुजरात का उपनिवेश बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री महाराष्ट्र में गुजराती उद्योगपतियों के व्यापारिक हितों को बढ़ावा देने के लिए रास्ते से हट गये। यह उनके आग्रह पर ही था कि महाराष्ट्र में स्थापित होने वाली कुछ औद्योगिक इकाइयों को गुजरात में स्थानांतरित कर दिया गया था।

उन्होंने यह भी आशंका जताई कि इससे एक बार फिर गुजराती लोग महाराष्ट्रियों के खिलाफ खड़े हो जायेंगे। दिसंबर 1953 में फज़ल अली आयोग ने तेलुगु भाषी लोगों तक के लिए भिन्न राज्य की घोषणा की, जिसमें आंध्र प्रदेश भी शामिल था। लेकिन वह महाराष्ट्र और गुजरात को अलग करने का कोई समाधान नहीं ढूंढ पाई। मराठी भाषी लोग हर साल 1 मई को महाराष्ट्र दिवस के रूप में मनाते हैं। यह गुजरात राज्य का स्थापना दिवस भी है। यह वह दिन है जब मुंबई शहर सहित महाराष्ट्र राज्य का गठन किया गया था। एक लंबे संघर्ष के कारण तत्कालीन बॉम्बे राज्य को दो राज्यों महाराष्ट्र और गुजरात में विभाजित किया गया था। उस समय कुल 107 लोगों की जानें चली गई थीं।

आरएसएस नेताओं ने कर्नाटक के नंदिनी मिल्क कोऑपरेटिव को बंद करने और संचालन को गुजरात स्थित अमूल को सौंपने के उनके प्रयास की ओर भी इशारा किया। यह भी बताया गया कि कैसे दो गुजराती नेता अपने पद और कार्यालय का उपयोग करके राज्यों पर अपना आदेश थोप रहे थे और महाराष्ट्र सरकार को गुजराती व्यापारियों और व्यापारियों की देखभाल करने के लिए मजबूर कर रहे थे।

अडानी पर राहुल गांधी के लगातार हमले ने आरएसएस नेताओं को बहुत अजीब स्थिति में डाल दिया। उन्हें महाराष्ट्र आरएसएस नेताओं के सवाल का जवाब देना मुश्किल हो रहा था। राहुल के हमले का एक रणनीतिक आयाम है। अडानी पर निशाना साधकर वह मोदी की साजिशपूर्ण कार्रवाई को बेनकाब करना चाहते थे। मोदी के साथ आरएसएस के संबंधों में और अधिक तनाव आने की वजह यह है कि राहुल पर हमला करने में धीमे रहने के आरएसएस के सुझाव को सुनने में मोदी की अनिच्छा है। यह बताया गया कि विभिन्न स्रोतों से जमीनी स्तर की प्रतिक्रिया ने इस तथ्य को स्पष्ट किया कि उनके हमले केवल राहुल को शक्तिशाली नेता के रूप में उभरने में मदद कर रहे थे।

राहुल के सवालों और आरोपों को खारिज करने के कारण आरएसएस नेता भी उनसे खुश नहीं थे। प्रधानमंत्री के तौर पर उन्हें राहुल का सामना करना चाहिए था और उनके सवालों का जवाब देना चाहिए था। पहले चरण के मतदान के तुरंत बाद हुई आरएसएस नेताओं की बैठक में, कुछ आरएसएस नेताओं ने इस बात पर भी चिंता व्यक्त की कि क्या वह भारत पर शासन करने में सक्षम हैं। इन नेताओं ने इस बात पर ज़ोर दिया कि आरएसएस नेतृत्व को होसबले की निंदा के तुरंत बाद कार्रवाई करनी चाहिए थी। उसे स्थिति को हाथ से बाहर नहीं जाने देना चाहिए था।

नड्डा ने अपने इंटरव्यू के जरिये मोदी को आधुनिक भारत के निर्माता के तौर पर पेश करने की कोशिश की, जिन्हें आरएसएस की जरूरत नहीं है। उन्होंने यह कहकर जनसंघ और भाजपा के पुराने नेताओं को नकारने का भी इरादा किया कि 'शुरुआत में, हम कम सक्षम, छोटे होते थे और हमें आरएसएस की आवश्यकता होती था। आज हम बड़े हो गये हैं और सक्षम हैं। भाजपा खुद चलाती है। यही अंतर है।'लोकसभा चुनाव के पांच चरण अभी संपन्न हो चुके हैं। केवल दो और बचे हैं। लोकसभा चुनाव के नतीजे 4 जून को आयेंगे। पहले से ही संकेत मिल रहे हैं कि भाजपा अपने हिंदी भाषी राज्यों में अनेक सीटें खो रही है। पीएम नरेंद्र मोदी और आरएसएस के प्रमुख नेतृत्व के बीच बड़ी खाई का बाकी दो चरणों में भाजपा की किस्मत पर असर पड़ना तय है। यह कितना होगा यह 4 जून को पता चलेगा।

यूपी के इन सीटों को माना जाता है भगवा गढ़

गोरखपुर मंडल में लोकसभा चुनाव के सातवें चरण में अंतिम कील यही ठोकने की तैयारी है

गोरखपुर । राजनीति के सारे समीकरण नतमस्तक नजर आते हैं, जब आप गढ़ में झांकते हैं। जाति की जुगलबंदी न जोड़–तोड़ का असर। नाथपीठ की ऐसी आभा कि असंतोष भी बेअसर। यह परिचय गोरखपुर मंडल की उन छह लोकसभा सीटों का है, जो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के गृह क्षेत्र का रुतबा रखती हैं। पहले पूर्वांचल और अब प्रदेश की राजनीति का शक्ति केंद्र। 1989 से अब तक देश में लहर चाहे किसी की रही हो, गोरखपुर सीट नाथपीठ की ही रही। पहले हिंदू महासभा फिर भाजपा से तीन बार सांसद बने गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ ने विरासत शिष्य योगी आदित्यनाथ को सौंपी तो उन्होंने भी पांच बार सांसद बनकर भाजपा को अजेय रखा। 2017 में वह मुख्यमंत्री बने तो उपचुनाव में सपा के प्रवीण निषाद ने झटका दिया, लेकिन 2019 के आम चुनाव में रवि किशन शुक्ल को तीन लाख मतों से जिताकर भाजपा ने यह सीट अपने नाम कर ली। फिल्म अभिनेता रवि किशन भाजपा से फिर मैदान में हैं। इंडी गठबंधन ने अभिनेत्री काजल निषाद को प्रत्याशी बनाया है। विधानसभा के दो और महापौर का चुनाव एक बार लड़ चुकीं काजल मुस्लिम, यादव व निषाद वोटों का समीकरण बनाकर मैदान में हैं।

उनके सामने नाथपीठ के प्रति निषादों की आस्था, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का प्रभाव, भाजपा की सहयोगी निषाद पार्टी के प्रमुख डा. संजय निषाद और पूर्व राज्यसभा सदस्य जयप्रकाश निषाद चुनौती बनकर खड़े हैं। मुस्लिम और दलित वोटों का समीकरण बनाकर बसपा से मैदान में उतरे जावेद सिमनानी मतदाताओं के बीच अपनी पहचान बनाने में जुटे हैं।

देवरिया: मजबूत प्रतिद्वंद्वियों में कड़ी होती टक्कर

ब्राह्मण बहुल देवरिया सीट पर दो बार बाहरी उम्मीदवार उतारकर विरोध झेल चुकी भाजपा ने दिल्ली आइआइटी के छात्र रहे बरपार के शशांक मणि त्रिपाठी को प्रत्याशी बनाया है। शशांक मणि राजनीतिक विरासत के भी धनी हैं। आइसीएस अफसर रहे बाबा सुरति नारायण मणि त्रिपाठी गोरखपुर विश्वविद्यालय के संस्थापक, दो विश्वविद्यालयों के कुलपति और दो बार एमएलसी रहे।

थलसेना में लेफ्टिनेंट जनरल पद से सेवानिवृत्त पिता श्रीप्रकाश मणि भी दो बार सांसद रहे। चाचा श्रीनिवास मणि गौरी बाजार के विधायक तो दूसरे चाचा आइपीएस श्रीविलास मणि उप्र पुलिस में डीजीपी पद से सेवानिवृत्त हैं। बीटेक के बाद एमबीए करके समाजसेवा में आने वाले शशांक मणि की लड़ाई कांग्रेस प्रत्याशी अखिलेश प्रताप सिंह से है। रुद्रपुर के विधायक रहे अखिलेश की पहचान समर्थकों के बीच विकास पुरुष की है। विपक्ष में रहते हुए रुद्रपुर में सड़कों का जाल बिछाने का श्रेय गिनाकर वह वोट मांग रहे हैं। गठबंधन के यादव, मुस्लिम समीकरण में बिरादरी के क्षत्रिय वोटों को जोड़ कर वह स्वयं को सीधे मुकाबले में ला रहे हैं। सौम्य स्वभाव और पुराने संबंधों के सहारे ब्राह्मण मतों को खींचने में लगे अखिलेश सिंह यदि इसमें सफल हो गए तो देवरिया सीट पर नए चेहरों के बीच रोमांचक जंग देखने को मिलेगी।

कुशीनगर: राजा की प्रतिष्ठा दांव पर

ऐसी सीट जहां प्रत्याशी ही नहीं, राजा की प्रतिष्ठा भी दांव पर है। भाजपा प्रत्याशी सांसद विजय कुमार दूबे ने 2014 के मुकाबले 2019 में भाजपा को चार गुणा अधिक मतों के अंतर से जीत दिलाई थी। कुर्मी–सैंथवार बहुल इस सीट पर गठबंधन ने पूर्व विधायक जनमेजय सिंह के बेटे सैंथवार अजय कुमार सिंह पिंटू को प्रत्याशी बनाकर घेराबंदी की तो भाजपा ने बिरादरी के छत्रप कहे जाने वाले 'राजा' आरपीएन सिंह को प्रचार की कमान सौंप दी। कुशीनगर का परिणाम आरपीएन की बिरादरी पर पकड़ भी बताएगा।

कुर्मी–सैंथवार मतों को लेकर खींचतान के बीच पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने ताल ठोककर मुकाबले रोचक कर दिया है। अन्य पिछड़ा वर्ग के मतों रिझाने में जुटे स्वामी की काट भाजपा ने पूर्व विधायक नथुनी प्रसाद कुशवाहा को पाले में करके की। बसपा ने शुभनारायण चौहान को उतारा है। कुशीनगर में पार्टी के बेस वोट के साथ दूसरे के वोटबैंक में जो सेंधमारी कर ले गया, समझिये ताज उसके सिर सज गया।

महराजगंज: चौधराहट को चौधरी की चुनौती

महराजगंज भाजपा का मजबूत किला है। 1999 और 2009 को छोड़ दें तो यहां से आठ बार लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी छह बार सांसद बन चुके हैं। भाजपा ने नौवीं बार पंकज चौधरी को प्रत्याशी बनाया है।सातवीं बार लोकसभा पहुंचने की तैयारी में लगे पंकज की घेराबंदी के लिए इंडी गठबंधन ने उनकी बिरादरी के ही कांग्रेसी विधायक वीरेन्द्र चौधरी को मैदान में उतारा है। कुर्मी, सैंथवार और पटनवार बहुल सीट पर बिरादरी के वोटों में सेंध लगाने के साथ मुस्लिम, यादव गठजोड़ को वीरेन्द्र जीत का आधार मानकर चल रहे हैं। बसपा ने इस सीट पर मौसमे आलम के रूप में मुस्लिम प्रत्याशी उतारकर गठबंधन को मुश्किल में डालने की चाल चली है। मोहम्मद मौसमे आलम दलित मतदाताओं के साथ यदि मुस्लिम मतों में सेंध लगा गए तो कांग्रेस प्रत्याशी की मुश्किल बढ़ जाएगी।

बांसगांव: मोदी-योगी के भरोसे जीत की कोशिश

बांसगांव सुरक्षित गोरखपुर–बस्ती मंडल की इकलौती सीट है, जिसे 77 वर्षों के इतिहास में सुभावती पासवान के रूप में एक मात्र महिला सांसद चुनने का गौरव प्राप्त है। सुभावती के बेटे तीन बार के सांसद कमलेश पासवान को भाजपा ने चौथी बार उम्मीदवार बनाया है।गुरु गोरक्षनाथ पर अटूट आस्था रखने वाले मतदाताओं ने कांग्रेस लहर में भी यहां भाजपा को जीत दिलाई है। मोदी के नाम और योगी के काम के सहारे मैदान में उतरे कमलेश के लिए जनता की नाराजगी दूर करना चुनौती है। बसपा छोड़ कांग्रेस में आए सदल प्रसाद इंडी गठबंधन से प्रत्याशी हैं।

लगातार तीन चुनाव हार चुके सदल प्रसाद सहानुभूति, मुस्लिम, यादव समीकरण के अलावा सवर्ण मतदाताओं में पैठ के चलते कमलेश को चुनौती दे रहे हैं। बसपा प्रत्याशी और पूर्व आयकर आयुक्त डा. रामसमुझ बसपा के बेस वोटों के साथ सवर्ण मतदाताओं को अपने पक्ष में करने में जुटे हैं, जो सदल के लिए मुश्किल का कारण है। इस सीट पर दलित वोटों का रुख जीत–हार का परिणाम तय करेगा।

सलेमपुर: बसपा ने बिगाड़ा सपा का समीकरण

अपने तीन विधानसभा क्षेत्रों को बलिया जनपद से साझा करने वाली सलेमपुर सीट पर लड़ाई रोमांचक है। जीत की हैट ट्रिक लगाने के इरादे से भाजपा ने सांसद रवीन्द्र कुशवाहा को प्रत्याशी बनाया है। दो बार के सांसद रवीन्द्र कुशवाहा के पिता हरिकेवल कुशवाहा भी यहां से दो बार सांसद बन चुके हैं। सामान्य होते हुए भी पिछड़ा वर्ग के प्रत्याशी को सांसद बनाने वाली कुशवाहा, राजभर बहुल सीट पर गठबंधन ने पूर्व सांसद रमाशंकर राजभर को प्रत्याशी बनाकर सीधा मुकाबला करने की तैयारी की। इसी बीच बसपा ने पूर्व प्रदेश अध्यक्ष भीम राजभर को प्रत्याशी बनाकर नई चुनौती खड़ी कर दी। अब सपा और बसपा प्रत्याशी राजभर वोटों को अपने पाले में करने में जुटे हैं। यदि राजभर वोटों का ध्रुवीकरण नहीं हुआ तो भाजपा के लिए लड़ाई आसान हो जाएगी।

बांसगांव में अब तक का चुनाव परिणाम

1962	1984	1999
1. महादेव प्रसाद, कांग्रेस	1. महावीर प्रसाद, कांग्रेस	1. राजनारायण पासी, भाजपा
2. पतरस, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी	2. राम सूरत, इंडियन कांग्रेस जे	2. सुभावती पासवान, सपा
1967	1989	2004
1. मोल्हउ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी	1. महावीर प्रसाद, कांग्रेस	1. महावीर प्रसाद, भाजपा
2. महादेव प्रसाद, कांग्रेस	2. फिरंगी प्रसाद, निर्दल	2. सदल प्रसाद, बसपा
1971	1991	2009
1. राम सूरत, कांग्रेस	1. राजनारायण, भाजपा	1. कमलेश पासवान, भाजपा
2. मोल्हउ, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी	2. महावीर प्रसाद, कांग्रेस	2. श्रीनाथ जी, बसपा
1977	1996	2014
1. फिरंगी प्रसाद, भारतीय लोकदल	1. सुभावती देवी, सपा	1. कमलेश पासवान, भाजपा
2. सुखदेव प्रसाद, कांग्रेस	2. राजनारायण, भाजपा	2. सदल प्रसाद, बसपा
1980	1998	2019
1. महावीर प्रसाद, कांग्रेस	1. राजनारायण पासी, भाजपा	1. कमलेश पासवान, भाजपा
2. राम सूरत, जनता पार्टी	2. सुभावती पासवान, सपा	2. सदल प्रसाद, बसपा

लोकसभा चुनाव बाद जो भी हो परिणाम बांसगांव में बनेगा इतिहास

गोरखपुर। तीसरे लोकसभा चुनाव (1962) से अस्तित्व में आयी गोरखपुर जिले की बांसगांव लोकसभा सीट शुरू से ही अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। बसपा को छोड़कर यहां से भाजपा, कांग्रेस व सपा ने जीत का परचम लहराया है। 18वीं लोकसभा के चुनाव में यह सीट ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां चुनाव का परिणाम चाहे जो आए, एक इतिहास कायम करेगा। यदि भाजपा के प्रत्याशी कमलेश पासवान जीते तो लगातार चार बार सांसद चुने जाने वाले पहले नेता बन जाएंगे। कांग्रेस के टिकट पर भाग्य आजमा रहे सदल प्रसाद को जनता का आशीर्वाद मिला तो तीन बार रनर रहने के बाद पहली बार जीत दर्ज करने वाले प्रत्याशी बन जाएंगे।

परिणाम बसपा के डा. रामसमुझ के पक्ष में रहा तो उन्हें गोरखपुर व बस्ती मंडल की एकमात्र सुरक्षित सीट पर बसपा का खाता खोलने का श्रेय मिलेगा। बांसगांव सुरक्षित सीट से दो प्रत्याशियों ने जीत की हैट–ट्रिक लगाने में कामयाबी पाई है। कांग्रेस के महावीर प्रसाद ने 1980, 1984 व 1989 के लोकसभा चुनावों में लगातार जीत हासिल की थी। सबसे अधिक चार बार सांसद रहने का रिकार्ड भी उनके नाम है। 2004 में उन्होंने चौथी जीत हासिल की थी लेकिन लगातार चार जीत वह भी नहीं दर्ज कर पाए थे। दूसरी हैट–ट्रिक लगाने वाले नेता हैं भाजपा के कमलेश पासवान। कमलेश ने 2009, 2014 व 2019 के चुनाव में जीत हासिल की है। इस बार फिर मैदान में हैं। अबकी भी जीत मिली तो महावीर प्रसाद के उपलब्धि की बराबरी तो कर ही लेंगे लेकिन लगातार चार जीत दर्ज करने का रिकार्ड भी बनाने में सफल रहेंगे। बात कांग्रेस प्रत्याशी सदल प्रसाद की करें तो उन्होंने बांसगांव में ही अपनी राजनीतिक जमीन तलाशी है। वह चौथी बार इस सीट से प्रत्याशी हैं। तीन चुनावों में उन्हें दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा था। 2004, 2014 व 2019 में वह बसपा के टिकट पर मैदान में थे और तीनों ही बार रनर रहे। 2009 का जब चुनाव हुआ तो वह प्रदेश की बसपा सरकार में मंत्री थे।

इस बार उन्होंने पार्टी बदल दी है। आइएनडीआइ गठबंधन के तहत कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। अब तक कोई ऐसा प्रत्याशी नहीं रहा है जो तीन चुनावों में रनर रहा हो। सदल को कामयाबी मिले या न मिले, रिकार्ड उनके नाम जरूर दर्ज होगा। बसपा के प्रत्याशी डा. रामसमुझ भी क्षेत्र में पसीना बहा रहे हैं। बसपा यहां पिछले चार चुनावों से दूसरे स्थान पर रही है लेकिन उसे जीत नहीं मिल सकी। इस बार यदि कामयाबी मिली तो इस सीट पर बसपा को पहली जीत मिलने का रिकार्ड बनेगा।

भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान इसी क्षेत्र से लगातार तीन बार से सांसद हैं। उनकी माता सुभावती पासवान 1996 में सपा के टिकट पर चुनाव जीत चुकी हैं। लंबे समय से प्रतिनिधित्व करने के कारण चुनाव प्रचार के दौरान कुछ लोगों के विरोध का सामना भी कमलेश को करना पड़ा है। मोदी योगी के नाम पर भाजपा प्रत्याशी को इस बार भी अपनी नइया पार लगने का भरोसा है।

जीत के लिए सबके अपने समीकरण गोरखपुर

भाजपा प्रत्याशी कमलेश पासवान इसी क्षेत्र से लगातार तीन बार से सांसद हैं। उनकी माता सुभावती पासवान 1996 में सपा के टिकट पर चुनाव जीत चुकी हैं। लंबे समय से प्रतिनिधित्व करने के कारण चुनाव प्रचार के दौरान कुछ लोगों के विरोध का सामना भी कमलेश को करना पड़ा है। मोदी, योगी के नाम पर भाजपा प्रत्याशी को इस बार भी अपनी नइया पार लगने का भरोसा है। उनकी बिरादरी के अच्छे–खासे मतदाता हैं। साथ ही भाजपा के नाते सवर्ण वोटों पर भी अपना दावा कर रहे हैं। उनके खाते में गिनाने को केंद्र व प्रदेश सरकार की उपलब्धियां भी हैं। इसके विपरीत सदल प्रसाद के समर्थक उनकी सरल छवि, तीन बार की हार के बाद सहानुभूति की उम्मीद व लंबे समय तक बसपा में रहने के कारण दलित मतों में सेंधमारी के बूते जीत का दावा कर रहे हैं। सपा के साथ होने के कारण यादव व मुस्लिम मत मिलने का भी भरोसा है। बसपा के डा. रामसमुझ बसपा के मूल मतदाताओं पर भरोसा जता रहे हैं। इसके साथ ही बसपा कार्यकर्ता अन्य वर्ग के मतदाताओं का समर्थन मिलने का भी दावा कर रहे हैं।

यूपी के इस विश्वविद्यालय में लेना चाहते हैं प्रवेश तो तुरंत करें आवेदन

8 जून है आखिरी तारीख

संवाददाता, गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्नातक, परास्नातक और शोध प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन की की तिथि को बढ़ा दिया गया है। अब इच्छुक अभ्यर्थी आठ जून तक आनलाइन आवेदन कर सकेंगे। प्रवेश प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. हर्ष कुमार सिन्हा ने बताया कि परास्नातक एवं शोध पात्रता परीक्षा के लिए पहले आनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि 22 मई तक घोषित थी। बीते कुछ दिनों में अभ्यर्थियों ने प्रमाणपत्र प्राप्त होने में हो रही देरी की समस्या बताई थी।

उनके अनुरोध को देखते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने विद्यार्थी हित में आनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि आठ जून तक बढ़ाने का निर्देश दिया। अब सभी परीक्षाओं के लिए अभ्यर्थी आठ जून तक पंजीकरण और शुल्क जमा कर सकेंगे। पूरित फार्म को आनलाइन जमा करने की अंतिम तिथि 10 जून निर्धारित की गई है।

एमजीपीजी में बीएससी इलेक्ट्रानिक्स का प्रैक्टिकल 27 को

महात्मा गांधी पीजी कालेज में बीएससी चतुर्थ सेमेस्टर इलेक्ट्रानिक्स की प्रयोगात्मक परीक्षा 27 मई को होगी। प्राचार्य प्रो. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए संबंधित छात्र–छात्राएं विभाग से संपर्क करें।

साथ ही सभी विद्यार्थी उपरोक्त तिथि को कालेज के यूनिफार्म, आईडी कार्ड, अपने प्रैक्टिकल रिकार्ड और प्रयोग संबंधी उपकरण आदि के साथ निर्धारित समय से उपस्थित हों।

प्रवेश प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. हर्ष कुमार ने बताया कि परास्नातक एवं शोध पात्रता परीक्षा के लिए पहले आनलाइन पंजीकरण की अंतिम तिथि 22 मई तक घोषित थी। बीते कुछ दिनों में अभ्यर्थियों ने प्रमाणपत्र प्राप्त होने में हो रही देरी की समस्या बताई थी। उनके अनुरोध को देखते हुए कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने विद्यार्थी हित में आनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि आठ जून तक बढ़ाने का निर्देश दिया।

बस्ती के लोगों से मिला भरपूर स्नेह और उत्साह यूपी में भाजपा-एनडीए की जीत की गारंटी दे रहा है।

मोदी की बस्ती में रैली

वरुण गांधी ने मां मेनका के लिए किया प्रचार

अमेठी-रायबरेली का इस तरह किया जिक्र

सुल्तानपुर,संवाददाता। भाजपा नेता वरुण गांधी ने सुल्तानपुर में अपनी मां व भाजपा प्रत्याशी मेनका गांधी के लिए प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने अमेठी व रायबरेली का भी जिक्र किया। भाजपा नेता वरुण गांधी ने सुल्तानपुर लोकसभा सीट पर अपनी मां मेनका गांधी के लिए प्रचार किया और उनके कार्यकाल में हुए कार्यों का जिक्र कर जनता से वोट मांगे।

उन्होंने कहा कि सुल्तानपुर ही एक ऐसा क्षेत्र है जहां की सांसद को माता जी बोला जाता है। मैं यहां अपनी मां के लिए नहीं बल्कि पूरे सुल्तानपुर की मां के लिए समर्थन की अपील करता हूं।

वरुण ने कहा कि जब हम 10 साल पहले यहां से चुनाव लड़ने के लिए आए तो लोगों ने कहा कि भैया, जैसी रौनक अमेठी और रायबरेली में है वैसी ही हम सुल्तानपुर में भी चाहते हैं। मुझे खुशी है कि आज सुल्तानपुर का नाम देश के प्रथम पंक्ति में आने वाले जिलों में लिया जाता है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने दिल्ली के दिलशाद गार्डन में एक जनसभा के दौरान कहा कि जो भी आपको मिला है संविधान ने दिया है. यह संविधान गरीबों की मेहनत से बना है इसलिए हम इसे नहल्ल मिटने देंगे. मोहन भागवत एक वीडियो में कहते हैं आरक्षण से देश को नुकसान होता है. हमने अपने मेनिफेस्टो में कह दिया है रिजर्वेशन को हम 50 फीसदी से आगे बढ़ाने जा रहे हैं.

'भाजपा वाले शहजादे-शहजादे बुलाते हैं हम शह भी देंगे और मात भी'

प्रतापगढ,संवाददाता। सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा की सरकार में लगातार महंगाई बढ़ती जा रही है। भाजपा ने जनता को धोखा दिया है, जबरदस्ती कोरोना की वैक्सीन लगाई गई। अब इस वैक्सीन से जान को खतरा पैदा हो गया। यूपी के प्रतापगढ़ में सपा मुखिया अखिलेश यादव की बड़ी जनसभा हो रही है। अखिलेश ने सपा प्रत्याशी एसपी सिंह के पक्ष में जनता से वोट करने की अपील की। जीआईसी ग्राउंड में जनसभा को संबोधित करते हुए अखिलेश ने भाजपा पर जमकर हमला बोला।

अखिलेश यादव ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जबसे समाजवादी और कांग्रेस एक हुए हैं तब से डबल इंजन टकरा रहे हैं। ये जीरो होने जा रहे हैं। भाजपा का यूपी की 80 की 80 सीटों पर सफाया हो रहा है। ये दिल्ली वाले कहते हैं शहजादे–शहजादे, ये शहजादे शह भी देंगे और मात भी देंगे। इन्होंने आय दोगुनी करने का वादा किया था, लेकिन किसी की भी आय दोगुनी नहीं हुई। महंगाई बढ़ती जा रही है।

सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा की सरकार में लगातार महंगाई बढ़ती जा रही है। भाजपा ने जनता को धोखा दिया है, जबरदस्ती कोरोना की वैक्सीन लगाई गई। अब इस वैक्सीन से जान को खतरा पैदा हो गया। वैक्सीन वाले बोल रहे है कि हम इसे वापस ले लेंगे, अब जब वैक्सीन शरीर में चली गई तो उसे वापस कैसे ले सकते हैं। इन्होंने वैक्सीन कंपनियों से चंदा वसूला। इन्होंने इलेक्ट्रोल बॉन्ड ने इनकी भ्रष्टचार की पोल खोल दी।

उन्होंने आगे कहा कि चुनाव से पहले ये राशन की चर्चा करते थे, आज राशन के नाम पर ये लोग ठगने का काम कर रहे हैं। इंडी गठबंधन की अगर सरकार बनेगी तो आपका राशन बढ़ाया जाएगा और उसकी मात्रा भी बढ़ाई जाएगी। जिससे लोगों को भरपेट भोजन मिल सके। लखनऊ और दिल्ली वाले हम लोगों को गुमराह कर रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर स्वास्थ्य व्यवस्था ध्वस्त कर दी।

अफसरों पर मेहरबान भाजपा: दो साल में तीन आईपीएस अफसर बीजेपी में हुए शामिल

लखनऊ,संवाददाता। भाजपा दलित वोट बैंक में सेंध लगाने के लिए ऐसे अफसरों को अपनी पार्टी में जगह दे रही है। हाल में ही डीजीपी के पद से सेवानिवृत्त विजय कुमार भी भाजपाई हो गए। चुनावी समर के दौरान यदि नौकरशाह सियासी दलों का दामन थामते हैं तो सबकी नजरें उन पर टिक जाती हैं। हालिया चुनाव में भी नौकरशाहों का सियासत में आने का सिलसिला जारी है। मंगलवार को सेवानिवृत्त आईपीएस प्रेम प्रकाश के भाजपा में शामिल होने से साफ हो गया कि यह चलन आगे और बढ़ेगा। दरअसल, बीते दो साल में प्रदेश के तीन आईपीएस अधिकारी भाजपा में शामिल हुए हैं। अफसर यदि दलित है तो पार्टी उसे खास तवज्जो दे रही है।

गौरतलब है कि वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मुंबई के पुलिस कमिश्नर रहे सत्यपाल सिंह ने भाजपा ज्वाइन की थी। इसके बाद वह सांसद और केंद्रीय मंत्री बने। इनके बाद वर्ष 2015 में यूपी से सेवानिवृत्त डीजीपी बृजलाल ने भी भाजपा से सियासी सफर की शुरुआत की और राज्यसभा सांसद बने। वहीं, वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में कानपुर के पुलिस कमिश्नर असीम अरुण ने वीआरएस लेने के बाद भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ा और वर्तमान में राज्य सरकार में समाज कल्याण मंत्री हैं।

ईडी के ज्वाइंट डायरेक्टर रहे राजेश्वर सिंह ने भी वीआरएस लेकर भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़े और विधायक बने। हालिया लोकसभा चुनाव के दौरान डीजीपी के पद से सेवानिवृत्त हुए विजय कुमार ने भी अपनी पत्नी के साथ भाजपा की सदस्यता ग्रहण करके राजनीतिक सफर का आगाज किया।

रेरा व सूचना आयोग में भी अफसरों का समायोजन

राज्य सरकार ने सेवानिवृत्त हुए कई आईपीएस अफसरों को दोबारा सिस्टम में लाने की बड़ी

पहल भी की। विजिलेंस डायरेक्टर के पद से सेवानिवृत्त भानु प्रताप सिंह को रेरा में सदस्य बनाया गया। इसी तरह डीजी इंटेलिजेंस के पद से सेवानिवृत्त भवेश कुमार सिंह और सेवानिवृत्त डीजीपी आरके विश्वकर्मा को सूचना आयोग में मुख्य सूचना आयुक्त के पद पर तैनात किया गया। सेवानिवृत्त आईपीएस सुबेश कुमार सिंह, सुधीर कुमार सिंह और गिरजेश कुमार चौधरी को भी सूचना आयोग में सूचना आयुक्त बनाया गया।

दलित वोट बैंक में सेंध की कवायद

भाजपा में दलित अफसरों की वाइल्ड कार्ड इंट्री का असली मकसद दलित वोट बैंक में सेंध माना जा रहा है। उदाहरण के तौर पर बृजलाल और प्रेम प्रकाश लंबे वक्त तक बसपा सरकार में अहम पदों पर रहने के दौरान दलितों को न्याय दिलाने की मुहिम चलाते रहे। दलित वोटरों के बीच उनकी लोकप्रियता को भांपकर ही भाजपा ने उन्हें तत्काल पार्टी में शामिल करने के साथ अहम पदों पर नियुक्त किया।

अन्य दलों में भी तवज्जो

सिर्फ भाजपा ही नहीं, बाकी दल भी अफसरों को तवज्जो दे रहे हैं। सेवानिवृत्त आईपीएस उमेश कुमार सिंह कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं तो हरीश कुमार बसपा में। प्रयागराज रेंज के आईजी केपी सिंह भाजपाई हो गए हैं। डीजी के पद से सेवानिवृत्त हुए आईपीएस सूर्य कुमार सिंह, बसपा सुप्रीमो मायावती के सुरक्षा अधिकारी रहे पदम सिंह भी भाजपा का हिस्सा बन चुके हैं। सेवानिवृत्त आईपीएस अरविंद सेन कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं।

अंतिम समय में बदला फैसला

हालिया लोकसभा चुनाव में फिरोजाबाद सीट से एक आईपीएस अधिकारी द्वारा वीआरएस लेकर भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ने की खासी चर्चा रही लेकिन अंतिम वक्त पर यह मामला अधर में लटक गया। इसके जरिये भाजपा फिरोजाबाद और आसपास के जिले के यादव वोट बैंक में सेंध लगाने की रणनीति पर काम कर रही थी।

गोरखपुर में चुनाव प्रचार के दौरान बंधे से नीचे गिरे भाजपा नेता

संवाद न्यूज एजेंसी, चौरीचौरा। चौरीचौरा विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता व जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि दीपक जायसवाल उर्फ दीपू चुनाव प्रचार के दौरान बंधे से गिर गए। चेहरे पर गंभीर चोट लगने के कारण इलाज के जिले के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। भाजपा नेता दीपक जायसवाल ब्रह्मपुर के ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि राघवेंद्र यादव, चौरीचौरा के पूर्व चेयरमैन ज्योति प्रकाश गुप्ता व अन्य कार्यकताओ के साथ बृहस्पतिवार को चौरीचौरा विधानसभा क्षेत्र के डुमरैला के बंधे पर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में चुनाव प्रचार करने गए थे। बंधे पर प्रचार के दौरान ही दीपक जायसवाल का पैर फिसल गया और वह बंधे से गिर गए। आसपास के लोगों ने भाजपा नेता को उठा कर इलाज के लिए एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहां उनका इलाज चल रहा है।

अवैध संबंध, लालच और हत्या: भाभी ने प्रेमी के साथ मिलकर देवर को मार डाला, 78 दिन तक सोशल मीडिया पर जिन्दा रखा

लखनऊ,संवाददाता। हत्या करने के बाद आरोपियों ने शव को मेरठ के सरधाना थाना क्षेत्र में फेंक दिया। उसको तीन गोलियां मारी गई थीं। अगले ही दिन रवि का शव यूपी पुलिस को मिल गया था। द्वारका जिले के बाबा हरिदास नगर इलाके में युवक रवि उर्फ सोनू (31) की अगवा करके हत्या मामले की गुत्थी को पुलिस ने 78 दिन बाद सुलझा लिया है। हत्या की साजिश किसी और ने नहीं, बल्कि उसकी भाभी ने अपने प्रेमी व उसके दोस्तों के साथ मिलकर रची थी। पुलिस ने इस संबंध में भाभी और उसके प्रेमी समेत चार आरोपियों को दबोच लिया है। इतना ही नहीं आरोपी इतने शातिर हैं कि 78 दिन तक सोशल मीडिया पर उसे जिंदा दिखाया। हत्या करने के बाद आरोपियों ने उसका मोबाइल ऑन रखा। आरोपी रवि को जिंदा दिखाने के लिए सोशल मीडिया पर उसके पुराने वीडियो डालने लगे। पुलिस ने आरोपियों की पहचान शिव एंक्लेव ढिचाऊ रोड, नजफगढ़ निवासी सीमा उर्फ रिंकू, इसका प्रेमी गांव जोंधी, झज्जर, हरियाणा निवासी नीरज सहरावत, शिव एंक्लेव, नजफगढ़ निवासी नीरज दहिया और गांव यूसुफपुर–ईसापुर, गाजियाबाद यूपी निवासी अनुभव मलिक के रूप में हुई है। आरोपियों के पास से वारदात में इस्तेमाल पिस्टल, कारतूस, एक मारुति स्विफ्ट कार व तीन मोबाइल फोन बरामद किए हैं।

द्वारका जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि रवि की बहन ज्योति ने 24 मार्च को बाबा हरिदास नगर में अपने भाई की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। ज्योति ने बताया कि उसका भाई पांच मार्च 2024 से गायब है। रवि अपने भाई दीपक और भाभी सीमा के साथ शिव एंक्लेव में रहता था और खेती करता था। ज्योति की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू की। लोकल पुलिस के अलावा एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वायड के इंस्पेक्टर कमलेश कुमार, थाना प्रभारी बलराम सिंह बेनीवाल समेत अन्यों की टीम का गठन किया गया। पुलिस ने मृतक के मोबाइल के सीडीआर के अलावा टेक्निकल सर्विलांस और सीसीटीवी फुटेज की पड़ताल की।जांच में पता चला कि रवि ने पांच मार्च की रात नीरज से बात की थी। तकनीकी जांच से पता चला कि आठ मार्च तक रवि के फोन की लोकेशन उसके घर के आसपास की ही थी। इसके बाद उसके मोबाइल की लोकेशन जनकपुरी की दिखने लगी। पुलिस ने रवि के परिजनों और जान पहचान वालों के नंबरों की जांच की। पता चला कि पांच मार्च को सीमा का फोन नीरज दहिया इस्तेमाल कर रहा था और उसकी लोकेशन गंग नहर, मोदीनगर के पास की थी। उस रास्ते के टोल प्लाजा के सीसीटीवी में सीमा की स्विफ्ट कार दिखी, जिसे नीरज सहरावत चला रहा था।

ऐसे खुला हत्या का राज

सीसीटीवी फुटेज और टेक्निकल सर्विलांस के आधार पर पुलिस ने पहले सीमा और नीरज सहरावत को हिरासत में लिया। इस बीच लगातार रवि का मोबाइल 19 मई तक ऑन रहा। शुरुआत में इन दोनों ने पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया, लेकिन बाद में पुलिस की सख्ती से वह टूट गए। इन लोगों ने हत्या की बात स्वीकार कर ली। सीमा ने बताया कि वह नीरज सहरावत से प्यार करती है और उसके साथ ही रहना चाहती है। उसका देवर इसका विरोध करता था। रवि ने कुछ दिनों पूर्व अपची एक प्रॉपर्टी को 18 लाख रुपये में बेचा था। इसमें से उसको हिस्सा नहीं दिया। कहने पर थोड़े बहुत पैसे दिए, लेकिन बाद में वह रुपये वापस मांगने लगा था। इसी बात को लेकर उसने अपने प्रेमी नीरज सहरावत के साथ उसकी हत्या की साजिश रची।

छह मार्च को सरधना पुलिस को मिल गया था शव

हत्या करने के बाद आरोपियों ने शव को मेरठ के सरधाना थाना क्षेत्र में फेंक दिया। उसको तीन गोलियां मारी गई थीं। अगले ही दिन रवि का शव यूपी पुलिस को मिल गया था। यूपी पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर छानबीन शुरू की। पहचान न होने पर यूपी पुलिस ने रवि के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव का अंतिम संस्कार कर दिया था। दिल्ली में हत्याकांड का खुलासा हुआ तो पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर नीरज दहिया और अनुभव को भी गिरफ्तार कर लिया।

78 दिन तक सोशल मीडिया पर जिंदा रखा

रवि की हत्या करने के बाद आरोपियों ने उसका मोबाइल ऑन रखा। आरोपी रवि को जिंदा दिखाने के लिए सोशल मीडिया पर उसके पुराने वीडियो डालने लगे। इससे यह लगता रहा कि वह जिंदा है। पूछने पर सीमा अपने पति व रवि की बहन से कहती थी कि उसका मोबाइल ऑन है, वहीं अपनी मर्जी से कहीं चला गया है। पता चला है कि रवि की शादी हुई थी। छह माह बाद ही उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई थी, तब से वह भाई–भाभी के साथ रहता था।

तपती गर्मी: जाम में फंसकर झुलस रहे राहगीर

हाथरस शहर में राम भरोसे हो रहा यातायात नियंत्रण

हाथरस। चिलचिलाती गर्मी के बीच हाथरस शहर के मोहनगंज तिराहा, घास की मंडी, नवीपुर चौराहा, घंटाघर चौराहा सहित चामड़ गेट, इगलास रोड फाटक, बिजली काटन मिल फाटक, सासनी गेट आदि पर लगने वाले जाम में कुछ मिनटों के लिए फंसना वाहन चालकों के लिए मुसीबत बन जाता है।

हाथरस शहर के तालाब चौराहे पर भले ही ओवरब्रिज का निर्माण कर दिया गया है, लेकिन शहर में जाम की समस्या से अभी तक शहरवासियों को पूरी तरह निजात नहीं मिली है। शहर में जाम के नए केंद्र बन गए हैं। तपती दोपहरी में इन रास्तों पर जाम में फंसे राहगीरों और वाहन चालकों का हाल बेहाल हो जाता है।

इस समय घरों में बैठे लोगों को ही गर्मी ने बेहाल कर रखा है। ऐसे में तपती धूप में बाजारों में निकलने वाले राहगीरों और वाहन चालकों पर क्या बीत रही होगी, इसका अंदाजा स्वतः ही लगाया जा सकता है। चिलचिलाती गर्मी के बीच शहर के मोहनगंज तिराहा, घास की मंडी, नवीपुर चौराहा, घंटाघर चौराहा सहित चामड़ गेट, इगलास रोड फाटक, बिजली काटन मिल फाटक, सासनी गेट आदि पर लगने वाले जाम में कुछ मिनटों के लिए फंसना वाहन चालकों के लिए मुसीबत बन जाता है। जाम से निजात दिलाने के लिए एकल मार्ग व्यवस्था पर प्रशासन की ओर से विचार तो किया जाता है, लेकिन इसे अमलीजामा नहीं पहनाया जा पा रहा। हालात यह हैं कि जैसे ही शहर से गुजरने वाले मुख्य मार्गों पर वाहनों के आवागमन का दबाव बढ़ता है, वैसे ही जाम लग जाता है।

मोहनगंज तिराहे पर नही बना गोल चक्कर

ओवरब्रिज से आगरा मार्ग की ओर मोहनगंज तिराहा अब जाम का नया केंद्र बन गया है। यहां गोल चक्कर बनाए जाने का प्रस्ताव था, ताकि वाहन आपस में उलझकर जाम न लगाएं, लेकिन अभी तक इसकी प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ सकी है। पिछले करीब एक साल से यहां से आने–जाने वाले लोग जाम से जूझ रहे हैं, लेकिन इस समस्या के निदान के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया है।

चंद पुलिस कर्मियों पर यातायात नियंत्रण का भार

जिले में यातायात पुलिस कर्मियों की संख्या काफी समय से कम है। मात्र 39 यातायात पुलिस कर्मियों के हवाले पूरे जिले के यातायात व्यवस्था को संभालने की जिम्मेदारी है। हालांकि समस्या को देखते हुए लगभग 35 पीआरडी जवान, 40 गार्ड व अन्य पुलिस कर्मियों की मदद ली जाती है, लेकिन यह इंतजाम भी नाकाफी साबित होते हैं।

हो सकता है इस समय कुछ देर के लिए कहीं जाम लग गया हो, क्योंकि यातायात पुलिस कर्मी चुनाव ड्यूटी वह चुनाव में गया है। जल्द ही चुनाव ड्यूटी में गए पुलिस कर्मी लौट आएंगे। उनके आते ही यातायात व्यवस्था सुचारू हो जाएगी।–हिमांशु माथुर, क्षेत्राधिकारी यातायात, हाथरस।

शहर के इगलास रोड पर जब फाटक बंद होता है तो जाम लग जाता है। जाम से निजात दिलाने के लिए कोई इंतजाम नहीं किए जा रहे। हम लोग अक्सर यहां परेशान होते हैं।–विष्णु कुमार निवासी इगलास रोड

मधुगढ़ी मार्ग दोनों ओर से जाम से घिरा हुआ है। एक ओर मथुरा रोड तो दूसरी ओर आगरा रोड पर जाम के कारण इस मार्ग पर भी जाम रहता है। इसका निस्तारण किया जाना चाहिए।–पुनीत कुमार निवासी मधुगढ़ी चौराहा

आगरा रोड से मुरसान गेट बांस मंडी की सड़क काफी संकरी है। इस सड़क पर यातायात सुचारू करने के लिए वन वे ट्रैफिक व्यवस्था लागू करनी चाहिए। तब ही कुछ राहत मिल सकती है।–महेश कुमार निवासी मुरसान गेट चौराहा

बस स्टैंड से आगे चलने पर पहले जाम नहीं मिलता था, लेकिन अब नवीपुर चौराहा इतना व्यस्त हो गया है कि यहां दिन भर जाम लगता रहता है। यहां शासन को अब यातायात नियंत्रण के लिए पुलिस कर्मी तैनात करने चाहिए।–दीपक कुमार निवासी नवीपुर चौराहा।

प्रोफेसर परेशान, महिलाओं को ताकते-झांकते हैं- घर में फेंकते हैं शराब की खाली बोतलें

गोरखपुर। कैटरर्स का कहना है कि जब से वहां मकान खरीदे हैं, प्रोफेसर को परेशानी हो रही है। हमेशा कहीं ना कहीं शिकायत करते हैं, इस वजह से मुझे भी परेशान होना पड़ता है। वहां मेरा ऑफिस है, कर्मचारी भी रहते हैं। प्रोफेसर को मेरे द्वारा लगाए सीसीटीवी कैमरे से एतराज है। पड़ोसी मेरे घर में महिलाओं को ताकते–झांकते हैं, शराब की खाली बोतलें भी फेंकते हैं। इतना ही नहीं, मेरे आवास के ठीक ऊपर सीसीटीवी कैमरे लगवाए हैं, जिससे मेरी निजता का हनन हो रहा है।

कोतवाली क्षेत्र के आर्यनगर चौक निवासी एक असिस्टेंट प्रोफेसर ने शहर के एक कैटरर्स पर यह आरोप लगाते हुए कोतवाली और डीआईजी को प्रार्थनापत्र दिया है।

इस मामले में कैटरर्स का कहना है कि जब से वहां मकान खरीदे हैं, प्रोफेसर को परेशानी हो रही है। हमेशा कहीं ना कहीं शिकायत करते हैं, इस वजह से मुझे भी परेशान होना पड़ता है। वहां मेरा ऑफिस है, कर्मचारी भी रहते हैं। प्रोफेसर को मेरे द्वारा लगाए सीसीटीवी कैमरे से एतराज है।

उन्होंने कहा कि जिस दिन कैमरे हटाए, उसी दिन प्रोफेसर उनके कर्मचारियों को फर्जी केस में फंसा देंगे। इस संबंध में कोतवाली पुलिस का कहना है कि कई बार घर जाकर जांच की गई है। दोनों पक्षों को समझाया गया है। कैटरर्स ने अपने कर्मचारी और ऑफिस की सुरक्षा के लिए कैमरे लगवाए हैं। इससे प्रोफेसर को कोई परेशान नहीं होनी चाहिए।

रील का शौक पड़ा भारी पेंट में तमंचा लगाकर युवक ने बनाया वीडियो जांच में जुटी पुलिस

जहांगीराबाद/बुलंदशहर। बुलंदशहर के पास जहांगीराबाद में एक युवक का रील बनाने का वीडियो वायरल हो गया है। युवक ने पेंट में तमंचा लगाकर रील बनाई। जिसके बाद अब पुलिस युवक की तलाश कर रही है। बुलंदशहर के पास जहांगीराबाद में एक युवक का रील बनाने का वीडियो वायरल हो गया है। युवक ने पेंट में तमंचा लगाकर रील बनाई। जिसके बाद अब पुलिस युवक की तलाश कर रही है।

कोतवाली क्षेत्र में एक युवक का अपनी पेंट में फिल्मी अंदाज में तमंचा लगाकर रील बनाने का वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो के आधार पर पुलिस युवक की तलाश में जुट गई है।

क्षेत्र में सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हुआ। जिसमें युवक तमंचा लगाकर घूमता दिखाई दे रहा है। इसके बाद युवक ने हाथ में तमंचा लेकर रील भी बनवाई। वहीं, वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने युवक की पहचान शुरू कर दी है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक का कहना है कि युवक की पहचान का प्रयास किया जा रहा है गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

गाजीपुर सबसे बड़ी और राबर्ट्सगंज सबसे छोटी

वाराणसी,संवाददाता। पूर्वांचल के इन जिलों में लोकसभा चुनाव की तैयारियां तेजी पर हैं। शासन–प्रशासन की ओर से मतदाताओं से वोटिंग की अपील की जा रही है। पिछले चुनाव की तुलना में इस बार वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने की हर तरह की कवायद चल रही है। जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। मतदाताओं की संख्या के लिहाज से हर चुनाव में लोकसभा क्षेत्रों की ग्रेडिंग तय होती है। हर बार आंकड़े बदल जाते हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में घोसी लोकसभा में सबसे अधिक मतदाता थे तो पूर्वांचल की सबसे बड़ी सीट घोसी थी। इस बार गाजीपुर सबसे बड़ी लोकसभा सीट है और इस पैमाने पर रॉबर्ट्सगंज सीट सबसे छोटी।

घोसी इस बार दूसरे नंबर पर है और भदोही तीसरे नंबर पर। वहीं वाराणसी इस मामले में चौथे नंबर पर है। यहां 19 लाख 62 हजार मतदाता हैं। पिछले चुनाव में चंदौली में सबसे अधिक मतदान हुआ था। चंदौली के अलावा पूर्वांचल की किसी भी सीट पर 60 फीसदी मतदान नहीं हुआ था।

चंदौली में सर्वाधिक 60.22, बलिया में सबसे कम 54.21 फीसदी वोट पड़े थे। 2019 लोकसभा में चंदौली में सबसे अधिक 60.22 फीसदी मतदान हुआ था जबकि बलिया में सबसे कम 54.21 फीसदी वोट पड़े थे। इसी तरह घोसी में 57.28 फीसदी और गाजीपुर में 58.07 फीसदी मतदान हुआ था। भदोही लोकसभा सीट पर 54.46 फीसदी और वाराणसी संसदीय सीट पर 57.11 फीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकारका प्रयोग किया था। इसी क्रम में जौनपुर में 55.71 फीसदी, मछलीशहर में 55.99 फीसदी, आजमगढ़ में 57.56 व लालगंज में 54.86 फीसदी मतदाताओं ने वोट किया था। वहीं रॉबर्ट्सगंज में 56.11 मतदाताओं ने मत का प्रयोग किया था।

औसत से ज्यादा वोटिंग क्यों नहीं होती

यह विडंबना ही कही जाएगी कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में पंजीकृत मतदाताओं मे अपने मताधिकार का प्रयोग ही नहीं करते।

लखनऊ। मौजूदा लोकसभा चुनाव में प्रतिशत के आसपास रहना निर्वाचन राजनेताओं के लिए भी चिंता का विषय के मूल उद्देश्य पूरे होते नहीं दिखते। स्थि पंजीकृत मतदाताओं के एक चौथाई हि समर्थन पाकर पार्टियां सरकार बना लेत आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। इलाकों में, जहां इस समय प्रचंड गर्म मतदान हो ही रहे हैं, पर्वतीय क्षेत्रों और गर्मी नहीं है, में भी मतदाताओं में उत्सा है। इसकी एक वजह राजनीतिक व्यवस्था से मोहभंग भी हो सकता है। निर्वाचन आयोग और राजनीतिक दलों की तरफ से मतदाताओं को मतदान के लिए जागरूक करने के तमाम प्रयास किए जाते हैं। लोगों को अपने मताधिकार का उपयोग करने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रेरित किया जाता है, लेकिन इससे बहुत फर्क नहीं पड़ता। कुछेक अपवादों को छोड़ दें, तो कभी वोटिंग औसत से ज्यादा नहीं बढ़ी। सिर्फ 2014 और 2019 में मतदाताओं ने उत्साह दिखाया था और औसतन 66 प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ था।

सवाल यह है कि ऐसे में क्या उपाय किए जाएं कि मतदाता मतदान करने के लिए प्रेरित हों। कम वोटिंग भारत ही नहीं, दुनिया भर के लोकतांत्रिक देशों के लिए चिंता का विषय है। कई देशों ने मताधिकार का उपयोग करना अनिवार्य कर दिया, तो कुछ देशों ने मतदान नहीं करने पर अलग–अलग तरह से दंड लगाने के कानून बनाए। हालांकि कुछ देशों ने बाद में व्यावहारिक परेशानियों के चलते इसे रद्द कर दिया।

सबसे पहले बेल्जियम ने 1892 में वोटिंग अनिवार्य करने का कानून बनाया। फिर अर्जेंटीना ने 1914 में और ऑस्ट्रेलिया ने 1924 में ऐसा ही कानून लागू किया। उसके बाद ऑस्ट्रिया, ब्राजील, मिस्र, फिजी, बुल्गारिया, बोलीविया, इटली, ग्रीस, फ्रांस (सिर्फ सीनेट), अमेरिका (कुछ राज्य), मैक्सिको, फिलीपीन, स्विट्जरलैंड, थाईलैंड, स्पेन, तुर्किये, वेनेजुएला, पेरू, पनामा आदि ने भी कानून बनाए। इनमें कुछ देशों ने कानून को आंशिक या पूर्ण रूप से रद्द कर दिया।

भारत की स्थिति कुछ भिन्न है। यहां कई बार वोटिंग अनिवार्य करने को लेकर लोकसभा में चर्चा हुई। यही निष्कर्ष निकला कि ऐसा करना व्यावहारिक नहीं होगा। इस संबंध में सबसे पहले चर्चा 1950 में तब शुरू हुई, जब जनप्रतिनिधित्व अधिनियम लागू किया जा रहा था। डॉ. भीमराव आंबेडकर सहित संविधान सभा के कई सदस्यों ने इसे सिरे से नकार दिया। 1990 में दिनेश गोस्वामी कमेटी ने वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के उपायों पर विचार करने के दौरान इसे अनिवार्य किए जाने पर भी गौर किया और अंततः इसे नामंजूर कर दिया। वर्ष 2001 में कंसल्टेशन पेपर ऑफ नेशनल कमीशन रिव्यू द वर्किंग ऑफ द कंस्टीट्यूशन ने इस मुद्दे पर विचार करने के बाद कहा कि वोट नहीं देने पर दंड का प्रावधान रखने से कई जटिलताएं पैदा होंगी। चुनावी खर्च को लेकर गठित तारकुंडे कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा कि वोटिंग अनिवार्य करने से मतदाताओं में रोष पैदा होगा और इसके दुरुपयोग की आशंका रहेगी। बेहतर होगा कि वोटरों को मतदान के लिए उत्साहित किया जाए।

लोकसभा में 2004 , 2009, 2012 एवं 2014 में प्राइवेट बिल पेश किए गए, लेकिन हर बार प्रस्ताव का विरोध हुआ। वर्ष 2009 में इस पर सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका पेश की गई, जिसमें मताधिकार का उपयोग नहीं करने वाले के घर की बिजली, पानी आदि काटने और आर्थिक दंड लगाने की मांग की गई। कोर्ट ने इसे बेहद अमानवीय बताकर याचिका खारिज कर दी। देश में चुनावों में अशिक्षित और अल्पशिक्षित मतदाताओं में मतदान को लेकर जितना उत्साह दिखता है, उतना प्रबुद्ध वर्ग में नहीं। प्रबुद्ध वर्ग का एक बड़ा हिस्सा आलस और अरुचि की वजह से घर से नहीं निकलता। वोटिंग लिस्ट में गड़बड़ी होना भी कम मतदान का एक कारण है। चुनाव से पहले मतदाता सूची को ठीक से अपडेट नहीं किया जाता और किया भी जाता है, तो उनमें कई त्रुटियां दिखती हैं। लोगों को शिकायत रहती है कि नाम शामिल करने, संशोधन आदि का फॉर्म बूथ लेवल अफसर (बीएलओ) को समय पर देने के बाद भी कुछ नहीं होता।यह विडंबना ही कही जाएगी कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में पंजीकृत वोटरों में से 40 प्रतिशत वोट ही नहीं देते।

भारत में इलाज कराने आए बांग्लादेश के सांसद की हत्या

कोलकाता में हुए थे लापता, मामले में तीन गिरफ्तार

कोलकाता । मंत्री ने बताया कि बांग्लादेश पुलिस ने 56 वर्षीय सांसद की हत्या के मामले में तीन को गिरफ्तार किया है। जब उनसे शव को लेकर सवाल किया गया, तो मंत्री ने कहा कि उन्हें अभी इसकी जानकारी मिलनी बाकी है। भारत में इलाज कराने के लिए आए बांग्लादेश के एक सांसद अनवरुल अजीम की कोलकाता में हत्या हो गई। बताया गया है कि वे 11 मई को इलाज कराने पश्चिम बंगाल पहुंचे थे। इसके बाद वे अचानक ही गायब हो गए। उनकी आखिरी ज्ञात लोकेशन कोलकाता के राजरहाट में स्थित संजीवा गार्डन्स थी। पुलिस ने इस मामले में शिकायत मिलने के बाद गुमशुदगी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। हालांकि, बुधवार को बांग्लादेश के गृह मंत्री असदुजमां खान ने एलान किया कि अजीम की हत्या हुई है। इस मामले में बांग्लादेश पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि आवामी लीग के सांसद अजमी अंसार, जो कि भारत में लापता हो गए थे, उनकी कोलकाता में एक फ्लैट में हत्या हो गई। अब तक यह सामने आया है कि उनके हत्यारे बांग्लादेशी हैं। उन्होंने साजिश रचकर सांसद की जान ली।

मंत्री ने बताया कि बांग्लादेश पुलिस ने 56 वर्षीय सांसद की हत्या के मामले में तीन को गिरफ्तार किया है। जब उनसे शव को लेकर सवाल किया गया, तो मंत्री ने कहा कि उन्हें अभी इसकी जानकारी मिलनी बाकी है। असदुजमां ने कहा कि वे जल्द ही इस मामले में हत्या की वजहों का खुलासा करेंगे। इस मामले में भारत की पुलिस भी जानकारी जुटा रही है। गौरतलब है कि अनवरुल अजीम आवामी लीग पार्टी से तीन बार के सांसद रहे हैं और कालीगंज उपजिला इकाई के अध्यक्ष भी हैं। बताया गया है कि वे जिस झेनाइदा संसदीय क्षेत्र से चुने जाते थे, वहां अपराध के आंकड़े काफी ज्यादा थे।

शेख हसीना ने लिया घटना का संज्ञान

अजीम 12 मई को इलाज के लिए भारत आए थे। 18 मई को उनके लापता होने से जुड़ी एक रिपोर्ट कोलकाता के बड़नगर पुलिस स्टेशन में दर्ज हुई थी। इस घटना पर बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने आश्चर्य और शोक प्रकट किया है।

जातियों की गणित में उलझे राजनीति के सूरमा

महराजगंज। सातवें चरण के मतदान की तिथि जैसे–जैसे नजदीक आ रही है, महराजगंज लोकसभा क्षेत्र में चुनावी रण रोचक होता जा रहा है। जन कल्याणकारी योजनाओं व विकास से शुरू हुई बात अब जातीय गणित बैठाने में उलझ गई है। भाजपा, आइएनडीआइ गठबंधन व बसपा के रणनीतिकार जातीय समीकरणों को साधते हुए कदम आगे बढ़ा रहे हैं। राजनीतिक दलों के दिग्गज नेता भी उन्हीं क्षेत्रों में भेजे जा रहे हैं, जहां उनके बिरादरी के मतदाताओं की संख्या अधिक है। इस सीट पर भाजपा व आइएनडीआइए के उम्मीदवार के बीच सीधी लड़ाई के आसार बन रहें हैं। वहीं बसपा प्रत्याशी की चाल पर भी सबकी निगाहें टिकी हैं। इस चुनाव में बसपा के परंपरागत वोट बैंक की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जा रही है। संसदीय क्षेत्र में अन्य पिछड़ा वर्ग के लगभग 22 प्रतिशत मतदाता हैं। अनुसूचित जाति के 18 व मुस्लिम समाज के मतदाताओं की संख्या लगभग 17 प्रतिशत है। महराजगंज में कुर्मी व पटनवारों (पटेल) की संख्या नौ प्रतिशत है। वैश्य व निषाद मतदाता सात–सात प्रतिशत तो ब्राह्मण लगभग आठ व यादव नौ प्रतिशत हैं। क्षत्रिय मतदाताओं की संख्या जिले में लगभग तीन प्रतिशत है। भाजपा व आइएनडीआइए अपने प्रत्याशियों के नामांकन के दिन से ही जातीय समीकरण साधने में जुट गए। पार्टी के नेताओं को बुलाकर नामांकन सभा कराई गई। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री व भाजपा प्रत्याशी पंकज चौधरी के नामांकन जुलूस में ब्राह्मण चेहरे के रूप में भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व सांसद डा. रमापति राम त्रिपाठी शामिल हुए। वहीं कुर्मी समाज में अपना प्रभाव रखने वाले राज्यसभा सांसद कुंवर आरपीएन सिंह भी पहुंचे थे। एमएलसी देवेंद्र प्रताप सिंह व अन्य क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों को भी जातीय समीकरण साधने के लिए बुलाया गया था। आइएनडीआइ गठबंधन उम्मीदवार वीरेंद्र चौधरी के नामांकन सभा में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे व सपा के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव मौजूद रहे। इसके जरिए अनुसूचित जाति एवं यादव मतदाताओं को संदेश देने की कोशिश की गई। कोल्हुई क्षेत्र के अड्डा बाजार में मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की सभा कराई गई। इस क्षेत्र में क्षत्रिय मतदाताओं की संख्या अच्छी–खासी मानी जाती है। इस सीट पर निषाद मतदाताओं को रिझाने के प्रयास भी चल रहे हैं। भाजपा ने इसके लिए निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री संजय निषाद को मैदान में उतार दिया है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव की बरगदवा कस्बे में सभा होगी। इसके जरिए यादव मतदाताओं को भाजपा के पक्ष में लाने का प्रयास किया जाएगा।

केवल एक बार सांसद बन सका मुस्लिम चेहरा

महराजगंज लोकसभा क्षेत्र में मुस्लिमों की संख्या लगभग 17 प्रतिशत है। सभी पार्टियां इन्हें अपने पाले में करने के लिए रिझाती हैं। लोकसभा चुनाव में यह निर्णायक भूमिका निभाते हैं, लेकिन प्रत्याशी बनाने में राजनीतिक दलों की रुचि नजर नहीं आती। मुस्लिम वोट बैंक का दावा करने वाली सपा ने भी यहां से कभी मुस्लिम प्रत्याशी नहीं उतारा। 1980 के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर अशफाक हुसैन सांसद चुने गए थे। उन्हें एक लाख 33 हजार 88 मत मिले थे। इसके बाद कांग्रेस ने इस सीट पर कभी मुस्लिम उम्मीदवार नहीं उतारा।

बहुजन समाज पार्टी ने 1999 व 2004 के चुनाव में तलत अजीज को टिकट दिया था। दोनों चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। 2024 के आम चुनाव में बसपा ने एक बार फिर मुस्लिम प्रत्याशी पर भरोसा जताते हुए मोहम्मद मौसमे आलम को हाथी का महावत बनाया है।

कुमह मतदाताओं का बंटवारा रोकने के लिए हो रही जुगत

लोकसभा क्षेत्र में कुर्मी, पटनवार व सैंथवार मतदाताओं की अच्छी संख्या है। अभी तक भाजपा के बेस वोटर रहे ये मतदाता इस बार आइएनडीआइए की तरफ से भी सजातीय उम्मीदवार वीरेंद्र चौधरी के उतरने से असमंजस में पड़ गए हैं। भाजपा प्रत्याशी पंकज चौधरी ने अपने इस परंपरागत वोट बैंक का बंटवारा रोकने के लिए – पूरी ताकत झोंक दी है।

दूसरी तरफ विपक्षी उम्मीदवार इन वोटों में सेंधमारी करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। बिरादरी में प्रभाव रखने वाले बड़े–बुजुर्गों को गांव–गांव भेज संबंधों की दुहाई देकर मतों का बिखराव रोकने का प्रयास किया जा रहा है। जिले के सिसवा विधानसभा क्षेत्र में कुर्मी व पटनवार जाति के लोगों की बहुलता है। पनियरा विधानसभा क्षेत्र में सैंथवार व कुर्मी जाति के लोग अधिक हैं। फरेंदा में कुर्मी तो सदर विधानसभा क्षेत्र में कुर्मी व पटनवार दोनों की संख्या है। 1991 के चुनाव में पहली बार भाजपा ने पंकज चौधरी को टिकट देकर यहां से कुर्मी मतदाताओं को साधने का प्रयास किया था। इसके बाद से अब तक भाजपा उन पर नौ बार भरोसा जता चुकी है। छह बार वह संसद पहुंचने में कामयाब रहे थे।

उफ ये गर्मी: बीकानेर में 47 डिग्री पार पहुंचा पारा, तपती रेत पर बीएसएफ जवान ने सेंका पापड़, तस्वीर वायरल

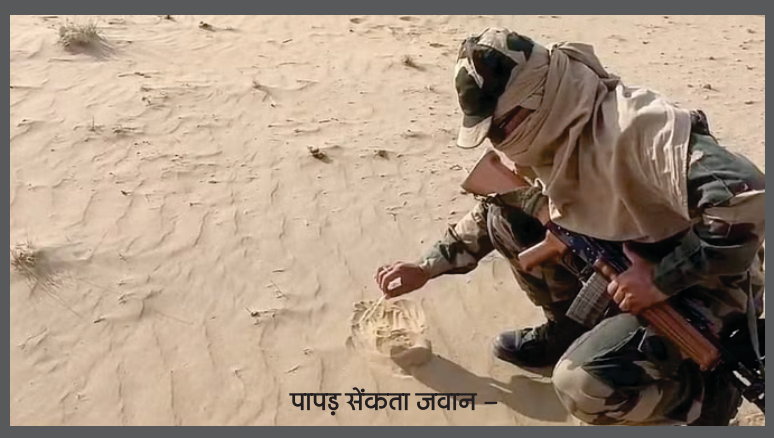

पापड़ सेंकता जवान –

बीकानेर। भारत–पाकिस्तान बॉर्डर पर जवानों ने गर्मी की प्रचंडता दिखाने के लिए अनूठा प्रयोग किया। यहां बीएसएफ के जवानों ने रेत पर पापड़ सेंके हैं। वायरल फोटो में देखा जा सकता है कि हमारे जवान किस तरह विपरीत परिस्थितियों में हमारे देश की सीमाओं की सुरक्षा में लगे हैं।

देश में इन दिनों भीषण गर्मी पड़ रही है। कई जगहों पर तापमान 44 डिग्री के पार पहुंच चुका है। आलम ये है कि गर्मी के कारण लोगों का हाल बेहाल है। ऐसे में राजस्थान से एक ऐसी फोटो सामने आई है, जिसे देखकर आप चौंक जाएंगे।

बीकानेर में किस तरह की गर्मी पड़ रही है, इसका अंदाजा आप इसी से लगा सकते हैं कि बीएसएफ के जवानों ने रेत पर पापड़ सेंके हैं। फोटो में देखा जा सकता है कि हमारे जवान किस तरह विपरीत परिस्थितियों में हमारे देश की सीमाओं की सुरक्षा में लगे हैं। एक ओर लोग गर्मी से निजात पाने के लिए एसी और कूलर का सहारा ले रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर देश की सीमाओं में तैनात हमारे जवान इस आग उगलने वाली गर्मी में दिन–रात चौकस है, ताकि हम सुरक्षित रह सके। वायरल फोटो बीकानेर के खाजूवाला से लगती पाक सीमा का बताया जा रहा है। बताया जा रहा है कि राज्य का सबसे गर्म शहर बीकानेर है। भीषण गर्मी में भी देश की रक्षा के लिए जवान रेतीले रेगिस्तान में डटे हैं। इसी दौरान जवानों ने रेत पर पापड़ सेंके।

आजमगढ़ में दोराहे पर नही मुस्लिम मन

एक तरफ विकास तो दूसरी तरफ सपा के गहरे हस्ताक्षर में फंसी जनता

आजमगढ़ । यादव और मुसलमान वोटरों की संख्या जीत के दरवाजे तक सीधे ले जाती है। इस लोकसभा सीट पर यादव करीब 25 प्रतिशत हैं और मुसलमान 13 प्रतिशत। एमवाई के इस गढ़ में यही वोट यहां का आजम बना देते हैं। वैसे दिनेश लाल यादव उर्फ निरहुआ से पहले रमाकांत यादव यहां कमल खिला चुके हैं। मुलायम सिंह–अखिलेश यादव दोनों को आजमगढ़ सीट ने संसद पहुंचने का मौका दिया।

इस समय हम आजमगढ़ जिले के सरायमीर में हैं। सरायमीर को दुनिया जानती है। अंडरवर्ल्ड डान अबु सलेम का गांव इसी इलाके में है। स्थानीय बाजार में यादव डेयरी के ठीक पास जोया चाइल्ड केयर है। यही चुनावी केमेस्ट्री है आजमगढ़ जिले की।

यादव डेयरी–जोया केयर की केमेस्ट्री ही यहां चुनाव के केंद्र में है। उपचुनाव में इस केमेस्ट्री में हुआ बदलाव तो कमल खिल गया। कारण बने गुड्डू जमाली। जमाली बसपा से उम्मीदवार बने और मुसलमानों के वोट बैंक में सेंध लगाकर सपा की राह में कांटा बिछा दिया। समाजवादी पार्टी ने चुनाव से ठीक पहले गुड्डू को ही एमएलसी बनाकर राह का कांटा साफ कर लिया।

आजमगढ़ में यादव और मुसलमान वोटरों की संख्या जीत के दरवाजे तक सीधे ले जाती है। इस लोकसभा सीट पर यादव करीब 25 प्रतिशत हैं और मुसलमान 13 प्रतिशत। एमवाई के इस गढ़ में यही वोट यहां का आजम बना देते हैं। वैसे, दिनेश लाल यादव उर्फ निरहुआ से पहले रमाकांत यादव यहां कमल खिला चुके हैं। मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव दोनों को आजमगढ़ सीट ने संसद पहुंचने का मौका दिया। मुलायम परिवार के धर्मेंद्र उपचुनाव की हार के बाद फिर से इस बार मैदान में हैं। 2009 के परिसीमन के बाद अब आजमगढ़ संसदीय क्षेत्र में आजमगढ़ सदर, गोपालपुर, सगड़ी, मुबारकपुर, मेहनगर विधानसभा क्षेत्र हैं।

इन सभी पांच विधानसभा क्षेत्र से सपा के ही विधायक हैं। योगी–मोदी की लहर के बावजूद 2022 के विधानसभा चुनाव में जिले की सभी दस सीटें सपा के खाते में चले जाने का आधार भी ऊपर की केमेस्ट्री ही है। जिले में दो लोकसभा क्षेत्र हैं–एक आजमगढ़ और दूसरा लालगंज। दस विधायकों में चार यादव और दो मुसलमान हैं। 2022 के लोकसभा उपचुनाव में अखिलेश यादव के चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव को हराने वाले निरहुआ के साथ आजमगढ़ के विकास का साथ है। आजमगढ़ की यूनिवर्सिटी, संगीत महाविद्यालय, यहां का नया हवाई अड्डा और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे का जुड़ाव भी गिनाने को कम नहीं है। पर विरोधी कहते हैं कि हवाईअड्डे की उड़ान में हौसला नहीं है।

कृष्णा श्राफ ने गिनाईं अभिनेत्री की खूबियां

दिशा पाटनी के साथ कैसा है टाइगर की बहन का रिश्ता

एंटरटेनमेंट डेस्क। जैकी श्रॉफ की बेटी और टाइगर श्रॉफ की बहन कृष्णा श्रॉफ जल्द ही स्टंट रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 14' में नजर आएंगी। रोहित शेट्टी के इस शो की शूटिंग के लिए हाल ही में सभी रोमानिया, यूरोप रवाना हुए हैं। कृष्णा श्रॉफ की अभिनेत्री दिशा पाटनी के साथ काफी अच्छी दोस्ती है। दोनों सोशल मीडिया पर अक्सर एक–दूसरे के साथ तस्वीरें साझा करते दिखते हैं। हाल ही में कृष्णा श्रॉफ ने दिशा की दिल खोलकर तारीफ की।

कृष्णा श्रॉफ ने रोहित शेट्टी के शो को लेकर अपनी खुशी जाहिर की। एक इंटरव्यू के दौरान उनसे दिशा पाटनी के साथ दोस्ती को लेकर सवाल पूछा गया। इस पर कृष्णा ने कहा, 'दिशा बहुत मेहनती हैं। हमारी विचारधारा समान है। इंडस्ट्री से उनका कोई लेना–देना नहीं है। उन्होंने एक बड़ी पहचान बनाई है। उनकी इस बात का मैं दिल से सम्मान करती हूं। वह खुद अपना घर चलाती हैं। स्वतंत्र हैं और जिम्मेदार हैं। वह अपनी उम्र के हिसाब से काफी समझदार हैं'।

कृष्णा ने आगे कहा, 'आज के समय में जहां महिलाएं एक–दूसरे को नीचा दिखाने में काफी आगे हैं। ऐसे में दिशा और मैं एक–दूसरे को ऊपर लाने की कोशिश करते हैं'। कृष्णा ने कहा कि दिशा ऐसी इंसान हैं, जो हमेशा मेरे साथ खड़ी रहती हैं, वह भी बिना जज किए। वे कभी जज नहीं करती हैं, उनके अंदर यह आदत ही नहीं'। कृष्णा के मुताबिक, 'मैंने अपनी जिंदगी के हर पहलू पर दिशा से बात की है और उस पर वह कभी जजमेंट नहीं रहीं। जब भी जरूरत होती है, वह मेरे लिए खड़ी होती हैं। यह बात उनके साथ भी है, उनकी जरूरत के वक्त मैं उनके साथ हूं'।

दिशा पटानी और कृष्णा श्रॉफ की दोस्ती तब हुई, जब दिशा का नाम कथित रूप से कृष्णा के भाई और एक्टर टाइगर श्रॉफ से जोड़ा गया। मालूम हो कि टाइगर और दिशा एक वक्त पर अपने कथित अफेयर के कारण खूब चर्चा में रहे। डेटिंग के बीच अचानक दोनों के ब्रेकअप की खबरें सामने आईं। टाइगर ने 'कॉफी विद करण' में यह खुलासा किया था कि वह 'सिंगल' हैं। इसके बाद दिशा के साथ उनकी डेटिंग की सभी अफवाहें बंद हो गईं।'खतरों के खिलाड़ी 14' के जरिए कृष्णा पहली बार छोटे पर्दे पर दस्तक दे रही हैं। कृष्णा श्रॉफ के अलावा रोहित शेट्टी के इस शो में अभिषेक कुमार, निमृत कौर अहलूवालिया, गशमीर महाजनी, सुमोना चक्रवर्ती, करणवीर मेहरा, शालीन भनोट, नियति फतनानी, आशीष मेहरोत्रा, शिल्पा शिंदे और अदिति शर्मा भी हैं।

मां के लिए व्रत रखते हैं राजकुमार

मुम्बई। बॉलीवुड एक्टर राजकुमार राव इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं. राजकुमार अपनी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही के प्रमोशन में बिजी हैं. फिल्म में राजकुमार के साथ जाह्नवी कपूर लीड रोल में नजर आने वाली हैं. फिल्म के प्रमोशन के दौरान राजकुमार ने अपनी मां से जुड़ी चीजों का खुलासा किया. उन्होंने बताया कि अपनी मां से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है. उन्होंने बताया कि अपनी मां के लिए उन्होंने एक चीज शुरू की थी जो उनके निधन के बाद भी वो कर रहे हैं. राजकुमार ने बताया कि यंग एज से वो अपनी मां के साथ शुक्रवार का व्रत रखते आए हैं और आज भी रखते हैं.

राजकुमार राव की मां का निधन 2016 में हो गया था. मां को खोने के बाद राजकुमार आज भी उन्हें बहुत याद करते हैं. राजकुमार के लिए उनकी मां इंस्पिरेशन थीं. कई बार इंटरव्यू में राजकुमार ने अपनी मां के बारे में बात की है।

आज भी रखते हैं व्रत

कर्ली टेल्स को दिए इंटरव्यू में राजकुमार राव ने कहा– 'मैं शुक्रवार को व्रत रखता हूं. ये मेरी मां संतोषी मां के लिए रखती थीं. मैंने भी बचपन से उन्हें फॉलो करना शुरू कर दिया था. मैं 16 साल की उम्र से व्रत रखता आया हूं और अब ये मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गया है.' उन्होंने बताया कि उनका व्रत रखने पर भी शेड्यूल बहुत डिमांडिग हो जाता है. खासकर शूट करते समय या फिर प्रमोशन के दौरान. फिर भी वो इसे मैनेज कर लेते हैं. राजकुमार ने कहा– कई बार मैं कुछ भी नहीं खाता हूं और कई बार जब मैं काम कर रहा होता हूं और मुझे बहुत एनर्जी लगानी होती है तो उस दिन मैं रात को खाना खा लेता हूं.

मां के लिए शेयर किया था पोस्ट

राजकुमार राव ने मां कमल यादव के लिए एक पोस्ट शेयर किया था. ये फोटो उनकी शादी का था जिसमें मां की तस्वीर को देखते हुए वो फ्लाइंग किस करते नजर आ रहे हैं. फोटो शेयर करते हुए राजकुमार ने लिखा– मां आप इस दुनिया की बेस्ट मां रहोगी. मैं जानता हूं आपकी ब्लेसिंग्स हमेशा मेरे साथ हैं. आपको रोज मिस करता हूं. लव यू. मिस्टर एंड मिसेज माही की बात करें तो ये फिल्म 31 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है. इस फिल्म का ट्रेलर आने के बाद से हर कोई इसके रिलीज होने का इंतजार कर रहा है।

'मैंने प्यार किया' की शूटिंग के वक्त अचानक रो पड़े थे

सलमान खान

मैंने प्यार किया हिन्दी सिनेमा की क्लट क्लासिक फिल्म मानी जाती है। 35 साल पहले आई इस मूवी ने सलमान को रातोंरात सुपरस्टार बना दिया था। निर्देशक सूरज बड़जात्या की Maine Pyar Kiya की शूटिंग के दौरान एक वक्त ऐसा भी आया था जब सलमान भावुक हो गए थे। आइए जानते हैं ऐसा क्या हुआ जो वह रोने लगे थे।

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। निर्देशक सूरज बड़जात्या की डेब्यू फिल्म मैंने प्यार किया (डंपदम च्लंत झपलं) सलमान खान के करियर की सबसे शानदार मूवीज में से एक मानी जाती है। 35 साल पहले आई इस फिल्म ने सलमान के करियर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। अभिनेत्री भाग्यश्री के साथ उनकी जोड़ी सुपरहिट रही और मैंने प्यार किया ने कामयाबी का स्वाद चखा।

लेकिन क्या आपको इस बात की जानकारी है कि फिल्म के एक गाने की शूटिंग के दौरान सलमान खान इमोशनल हो गए थे और सेट पर रोने लगे थे। इस मामले का खुलासा अब खुद सलमान ने किया है। 1989 में मैंने प्यार किया को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया। फिल्म की कहानी और गानों ने फैंस के दिलों पर ऐसा कमाल किया, जिसकी छाप आज भी कायम है। हाल ही में सलमान खान ने हेलो, इंडो–अरबिया को एक लेटेस्ट इंटरव्यू दिया है और इस दौरान उन्होंने मैंने प्यार किया को लेकर एक दिलचस्प किस्सा सुनाया है।

सलमान ने बताया है– मैंने प्यार किया मेरे लिए बेहद खास फिल्म रही है। फिल्म के कबूतर जा जा जा गाने की शूटिंग चल रही थी और मैं ये यकीन नहीं कर पा रहा था कि मैं इस मूवी का हिस्सा हूं। इतना सोचते ही मेरे अंदर भावनाओं के सैलाब उमड़ पड़ा और मेरी आंखों में आंसू आ गए।

क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस तरह की फिल्म का हिस्सा मैं भी बनूंगा। मुझे लगता था की उस दौर के सुपरस्टार जैकी श्रॉफ और अनिल कपूर ही ऐसी मूवीज के लिए बने हैं। ऐसे में उनकी तरह खुद को सोच कर मैं भावुक हो गया था।

सिकंदर से सलमान खान करेंगे कमबैक

सलमान खान का नाम इस समय उनकी मोस्ट अवेटेड फिल्म सिकंदर को लेकर चर्चा में है। कुछ दिन पहले ही इसकी ऑफिशियल अनाउंसमेंट हुई है। सलमान के साथ इस मूवी में साउथ सुपरस्टार रश्मिका मंदाना भी लीड रोल में नजर आने वाली हैं।

सलमान खान की शानदार फिल्म मैंने प्यार किया रातोंरात इस फिल्म ने भाईजान को बनाया सुपरस्टार शूलटग के वक्त रोने लगे थे सलमान

मैच के बाद जिस तरह से बेंगलुरु के खिलाड़ियों ने दिनेश कार्तक को गले लगाया, ऐसा माना जा रहा है कि यह कार्तक का आईपीएल में आखिरी मैच भी था।

खत्म हुआ दिनेश कार्तिक का सफर?

स्पोर्ट्स डेस्क। राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच बुधवार को आईपीएल 2024 का एलिमिनेटर मुकाबला खेला गया। इस मैच में राजस्थान ने आरसीबी को चार विकेट से हरा दिया। इसी के साथ बेंगलुरु का सफर आईपीएल में समाप्त हो गया जबकि राजस्थान क्वालिफायर–2 में पहुंच गई। इस बीच कयास लगाए जा रहे हैं कि आरसीबी के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक आईपीएल से जल्द ही संन्यास की घोषणा कर सकते हैं। माना जा रहा है कि यह उनके करियर का आखिरी मुकाबला था। हालांकि, अब तक दिग्गज की तरफ से इसको लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

क्या दिनेश कार्तिक का करियर खत्म?

दरअसल, मैच के बाद जिस तरह से बेंगलुरु के खिलाड़ियों ने दिनेश कार्तिक को गले लगाया, ऐसा माना जा रहा है कि यह कार्तिक का आईपीएल में आखिरी मैच भी था। कार्तिक ने इससे पहले सीएसके को हराने के बाद कहा था कि उन्हें लगा था कि सीएसके के खिलाफ मैच उनके आईपीएल करियर का आखिरी होगा। ऐसे में कार्तिक का करियर खत्म माना जा रहा है। राजस्थान के खिलाफ मैच के बाद बेंगलुरु के खिलाड़ियों ने विकेटकीपर बल्लेबाज को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

कार्तिक का करियर

बात करें दिनेश कार्तिक के करियर की तो यह उनका आरसीबी के साथ दूसरा कार्यकाल था। 2015 में बेंगलुरु ने उन्हें 10.5 करोड़ रुपए में खरीदा था। इस दौरान बल्ले से उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा था। वह 11 मैचों में सिर्फ 141 रन बना सके। हालांकि, पिछले सीजन उन्होंने वापसी की और मजबूत फिनिशर बनकर उबरे। आईपीएल 2022 में दिनेश कार्तिक ने 180 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए और वनडे विश्व कप स्क्वॉड में जगह बनाई थी। वह कोलकाता के लिए भी आईपीएल में खेल चुके हैं।

कार्तिक ने 257 मैचों में 4842 रन के साथ अपना आईपीएल करियर समाप्त किया जिसमें 22 अर्द्धशतक शामिल हैं। अपने 17 सालों के शानदार आईपीएल करियर में वह आरसीबी के अलावा दिल्ली डेयरडेविल्स, किंग्स इलेवन पंजाब, मुंबई इंडियंस, गुजरात लायंस और कोलकाता नाइट राइडर्स का हिस्सा रहे। मौजूदा सीजन में उन्होंने 15 मैचों में 187.36 की स्ट्राइक रेट के साथ 326 रन बनाए।

'जब तक IPL खेल रहे धोनी तब तक उन्हें CSK का कप्तान रहना चाहिए'

टीम इंडिया के हेड कोच बनने का मिला था ऑफर, मैंने ठुकरा दिया: पोंटिंग

रिकी पोंटिंग ने खुलासा किया है कि जल्द ही खाली होने वाले टीम इंडिया के हेड कोच के पद के लिए उनसे संपर्क किया गया था लेकिन उन्होंने इस पेशकश को ठुकरा दिया क्योंकि यह अभी उनकी 'लाइफस्टाइल' में फिट नहीं बैठता. पोंटिंग ने आईसीसी से कहा, ''आईपीएल के दौरान कुछ आमने–सामने की बातचीत हुई थी, ताकि पता चल सके कि इस पद में मेरी दिलचस्पी है या नहीं.'' उन्होंने कहा, ''मैं राष्ट्रीय टीम का सीनियर कोच बनना पसंद करूंगा लेकिन मेरे जीवन में अन्य चीजें हैं और मैं घर पर कुछ समय बिताना चाहता हूं. हर कोई जानता है कि अगर आप भारतीय टीम के साथ काम करोगे तो आप आईपीएल टीम में शामिल नहीं हो सकते।

संजू सैमसन ने रचा इतिहास, लीजेंड शेन वॉर्न के क्लब में हुए शामिल

राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मुकाबले में विराट कोहली की रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को अनुष्का विराट सपोर्ट करने के लिए आई थीं. मगर आरसीबी के मैच हारने के बाद अनुष्का शर्मा बहुत उदास हो गईं क्योंकि आईपीएल 2024 से आरसीबी बाहर हो गई है जिससे विराट कोहली का दिल टूट गया है. अनुष्का शर्मा के चेहरे पर उदासी साफ नजर आ रही है. उनके रिएक्शन का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है.

IPL से बाहर हुई RCB तो उदास हुई अनुष्का शर्मा, वायरल हुआ वीडियो

मैक्सवेल के नाम हुआ शर्मनाक रिकार्ड

आईपीएल में शून्य पर आउट होने के मामले में की कार्तिक की बराबरी

स्पोर्ट्स डेस्क। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बेंगलुरु ने 20 ओवर में आठ विकेट गंवाकर 172 रन बनाए थे। जवाब में राजस्थान ने 19 ओवर में छह विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। इस तरह बेंगलुरु के लगातार छह मैच जीतने का सफर भी खत्म हो गया। इस मैच में टीम के स्टार ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल अपना प्रभाव छोड़ने में नाकाम हुए। आईपीएल 2024 का एलिमिनेटर मुकाबला बुधवार को राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच खेला गया। इस मैच में संजू सैमसन की टीम ने आरसीबी को चार विकेट से हराकर क्वालिफायर–2 में जगह बना ली। अब राजस्थान 24 मई को सनराइजर्स हैदराबाद से भिड़ेगी। एलिमिनेटर मैच में ग्लेन मैक्सवेल गोल्डन डक का शिकार हुए। इस सीजन वह चौथी बार शून्य पर आउट हुए।

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बेंगलुरु ने 20 ओवर में आठ विकेट गंवाकर 172 रन बनाए थे। जवाब में राजस्थान ने 19 ओवर में छह विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। इस तरह बेंगलुरु के लगातार छह मैच जीतने का सफर भी खत्म हो गया। इस मैच में टीम के स्टार ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल अपना प्रभाव छोड़ने में नाकाम हुए।

मैक्सवेल ने की कार्तक की बराबरी

इसी के साथ 35 वर्षीय खिलाड़ी के नाम एक शर्मनाक रिकॉर्ड दर्ज हो गया। वह आईपीएल में सबसे ज्यादा बार गोल्डन डक का शिकार होने के मामले में दिनेश कार्तिक के बराबर पहुंच गए। विकेटकीपर बल्लेबाज 18 बार आईपीएल में पहली गेंद पर आउट हुए। वहीं, मैक्सवेल भी बीती रात 18वीं बार आईपीएल में गोल्डन डक पर आउट हुए। टी20 क्रिकेट में मैक्सेवल ने 32वीं बार पहली गेंद पर शिकार हुए।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार

मो0. नं0. 7307180148,9170772370

Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद–विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।